सत्यमेव जयते

INDIA

गणतंत्र दिवस परेड
Republic Day Parade

26 जनवरी 2006 (माघ 6, शक संवत् 1927)

26 January 2006 (6 Magha, Saka Samvat 1927)

कार्यक्रम

0957 बजे भारत के राष्ट्रपति का मुख्य अतिथि, दो पवित्र मस्जिदों के अभिरक्षक सऊदी अरब के महामहिम राजा, के साथ राजकीय सम्मान सहित आगमन।

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति और मुख्य अतिथि का स्वागत।

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति और मुख्य अतिथि से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सैन्य प्रमुखों और रक्षा सचिव का परिचय।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और मुख्य अतिथि का मंच की ओर प्रस्थान। प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि की, उनके आसनों की ओर अगवानी।

राष्ट्रीय ध्वज का फहराया जाना तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षकों द्वारा राष्ट्रीय सलामी। बैंड द्वारा राष्ट्रीय गान की प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।

गणतंत्र दिवस परेड का शुभारंभ।

सांस्कृतिक प्रस्तुति।

मोटर साइकिल पर करतब।

विमानों द्वारा सलामी।

राष्ट्रीय सलामी।

राष्ट्रपति द्वारा मुख्य अतिथि के साथ राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान।

PROGRAMME

0957 hours The President, accompanied by the Chief Guest, The Custodian of the two holy mosques, King of Saudi Arabia, arrives in State.

The Prime Minister receives the President and the Chief Guest.

The Prime Minister presents to the President and the Chief Guest, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, the three Service Chiefs and Defence Secretary.

The President, the Prime Minister and the Chief Guest proceed to the Rostrum. The Prime Minister escorts the President and the Chief Guest to their seats.

The National Flag is unfurled. The President's Body-Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.

The Republic Day Parade commences.

The Cultural Pageant.

Motor Cycle Display.

Fly-past.

National Salute.

The President, accompanied by the Chief Guest, departs in State.

परेड–क्रम

भारतीय वायु सेना के हेलिकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर
परेड उप–कमांडर
परमवीर चक्र और अशोक चक्र विजेता

सेना

सवार जत्था

61 रिसाला

मैकेनाइज्ड जत्थे

टोही वाहन

एम.बी.टी. अर्जुन

155 एम. एम. सॉल्टम गन

वैपन लोकेटिंग राडार

अग्नि - I मिसाइल

अग्नि - II मिसाइल

तुंगस्का माउंट्स

कवचित इंजीनियरिंग टोही वाहन

हाइड्रेमा डिमाइनिंग वाहन

नेटवर्क ऑपरेशन केंद्र

मोबाइल कम्युनिकेशन नोड

बी.आर.डी.एम. (स्ट्राइकर)

कैरियर मोर्टार ट्रैक्ड

बी.एम.पी.-II

3

ORDER OF MARCH

Showering of Flower Petals by IAF Helicopters

Parade Commander
Parade Second-in-Command
Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

ARMY

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanised Columns

Recce Troup Vehicle

MBT Arjun

155 mm Soltom Gun

Weapon Locating Radar

AGNI - I Missile

AGNI - II Missile

Tunguska Mounts

Armoured Engineering Reconnaissance Vehicle

Hydrema Demining Vehicle

Network Operation Centre

Mobile Communication Node

BRDM (Striker)

Carrier Mortar Tracked

BMP-II

मार्च करती हुई टुकड़ियां

मद्रास रेजिमेंट

ए.सी. सेंटर और स्कूल
आर्टिलरी सेंटर, नासिक रोड } बैंड धुन : 'अमर सेनानी'

मराठा लाइट इन्फैंट्री

राजपूताना राइफल्स

तोपखाना वायु रक्षा
बंगाल इंजीनियरिंग ग्रुप एवं सेंटर } बैंड धुन : 'अप्पू 1982'

सिंख लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंट

गढ़वाल राइफल्स

ब्रिगेड ऑफ गार्ड्स
पंजाब रेजिमेंटल सेंटर } बैंड धुन : 'बॉम्बे सैपर्स'

कुमाऊं रेजिमेंट

जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स

ग्रेनेडियर्स रेजिमेंटल सेंटर
मराठा लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंटल सेंटर } बैंड धुन : 'वीर गोरखा'

1 गोरखा राइफल्स (14 जी.टी.सी)

राजपूत रेजिमेंटल सेंटर
असम रेजिमेंटल सेंटर } बैंड धुन : 'हंसते लुशाई'

प्रादेशिक सेना (सिख)

नौसेना

नौसेना ब्रास बैंड धुन : 'जय भारती'
मार्च करती हुई टुकड़ी

झांकी : समुद्र में स्कोर्पियन पनडुब्बी

Marching Contingents

The Madras Regt.

The AC Centre and School
The Arty Centre Nasik Road } Band playing 'Amar Senani'

The Maratha LI

The Rajputana Rifles

The Arty Air Defence
Bengal Engr. Gp. and Centre } Band playing 'Appu 1982'

The SIKH LI Regt.

The Garhwal Rifles

The Brigade of Guards
The Punjab Regtl. Centre } Band playing 'Bombay Sappers'

The Kumaon Regt.

The Jammu and Kashmir Rifles

The Grenadiers Regtl. Centre
The Maratha LI Regtl. Centre } Band playing 'Veer Gorkha'

1 Gorkha Rifles (14 GTC)

The Rajput Regtl. Centre
The Assam Regtl. Centre } Band playing 'Hanste Lushai'

The Territorial Army (SIKH)

NAVY

Naval Brass Band : Band playing 'Jai Bharti'
Marching Contingent

Tableau : Scorpion Submarine at Sea

वायु सेना

वायु सेना बैंड धुन : 'साउंड वैरियर'
वायु सेना की मार्च करती हुई टुकड़ी

वाहन–जत्थे

पृथ्वी मिसाइल
इन्द्र पीसी-II राडार

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन–उपस्कर जत्था

पिनाका
ब्रिज लेयर टैंक
एम्फिबियस फेरी एंड फ्लोटिंग सिस्टम
ब्रह्मोस

झांकी : ब्रह्मोस मिसाइल मॉकअप ढांचा

भूतपूर्व सैनिक

ए.एस.सी. सेंटर (नॉर्थ) तथा ए.ओ.सी. ट्रेनिंग सेंटर } बैंड धुन 'गिरिराज'

भूतपूर्व सैनिकों की मार्च करती हुई टुकड़ी

अर्द्ध–सैन्य तथा अन्य सहायक सिविल बल

सीमा सुरक्षा बल : बैंड धुन : 'विजय भारत'
सीमा सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

सीमा सुरक्षा बल के ऊंटों की टुकड़ी
सीमा सुरक्षा बल के ऊंट : बैंड धुन : 'हम हैं सीमा सुरक्षा बल'

असम राइफल्स की मार्च करती हुई टुकड़ी
असम राइफल्स : बैंड धुन : 'असम राइफल्स के सिपाही'

तटरक्षक बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

केंद्रीय आरक्षी पुलिस बल : बैंड धुन : 'सेवा भक्ति का यह प्रतीक'
केंद्रीय आरक्षी पुलिस बल की मार्च करती हुई महिला टुकड़ी

AIR FORCE

Air Force : Band playing 'Sound Warrior'
Marching Contingent Air Force

Vehicular Columns

Prithvi Missile
Indra PC-II Radar

DRDO EQUIPMENT COLUMNS

Pinaka
Bridge Layer Tank
Amphibious Ferry and Floating System
BrahMos

Tableau : BrahMos universal vertical launcher

EX-SERVICEMEN

ASC Centre (North) and AOC Trg. Centre } Band playing 'Giriraj'

Ex-Servicemen Marching Contingent

PARA-MILITARY AND OTHER AUXILIARY CIVIL FORCES

BSF : Band playing 'Vijay Bharat'
BSF Marching Contingent

BSF Camel Contingent
BSF Camel : Band playing 'Hum Hain Seema Suraksha Bal'

Assam Rifles Marching Contingent
Assam Rifles : Band playing 'Assam Rifles Ke Sipahi'

Coast Guard Marching Contingent

CRPF : Band playing 'Seva Bhakti Ka Yah Prateek'

CRPF Mahila Marching Contingent

भारत–तिब्बत सीमा पुलिस : बैंड धुन : 'हम सरहद के सेनानी'
भारत–तिब्बत सीमा पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी

ITBP : Band playing 'Hum Sarhad Ke Senani'
ITBP Marching Contingent

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल : बैंड धुन : 'हिन्दुस्तान'
केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

CISF : Band playing 'Hindustan'
CISF Marching Contingent

एस.एस.बी. : बैंड धुन : 'हम हैं सशस्त्र सीमा बल'
एस.एस.बी. की मार्च करती हुई टुकड़ी

SSB : Band playing 'Hum Hain Sashastra Seema Bal'
SSB Marching Contingent

रेलवे सुरक्षा बल : बैंड धुन : 'सारे जहां से अच्छा'
रेलवे सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

RPF : Band playing 'Sare Jahan Se Achchha'
RPF Marching Contingent

दिल्ली पुलिस : बैंड धुन : 'दिल्ली पुलिस'
दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी

Delhi Police : Band playing 'Delhi Police'
Delhi Police Marching Contingent

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.)

NATIONAL CADET CORPS (NCC)

बालक (रा.कै.को.) द सिंधिया स्कूल,
ग्वालियर फोर्ट : बैंड धुन : 'विजय भारत'
सीनियर डिवीजन के बालकों की मार्च करती हुई टुकड़ी

Boys (NCC) The Scindia School,
Gwalior Fort : Band playing 'Vijay Bharat'
Senior Division Boys Marching Contingent

बालिकाएं (रा.कै.को.) : बिरला बालिका विद्यापीठ,
पिलानी : बैंड धुन : 'सारे जहां से अच्छा'
सीनियर डिवीजन की बालिकाओं की मार्च करती हुई टुकड़ी

Girls (NCC) Birla Balika Vidyapeeth,
Pilani : Band playing 'Saare Jahan Se Achchha'
Senior Division Girls Marching Contingent

राष्ट्रीय सेवा योजना

NATIONAL SERVICE SCHEME

राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती हुई टुकड़ी
सामूहिक पाइप और ड्रम : बैंड धुन : 'फूलों की घाटी'

National Service Scheme Marching Contingent
Massed Pipes and Drums : Band playing 'Phoolon Ki Ghati'

सांस्कृतिक प्रस्तुति

THE CULTURAL PAGEANT

झांकियां : चौबीस

TABLEAUX : Twenty Four

हाथियों पर सवार राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे

National Bravery Award Winning Children on Elephants

बच्चों की प्रस्तुति

दिल्ली स्कूल (बालक और बालिकाएं)
बैंड धुन : 'कारगिल के वीर'
ध्वज वाहक : बालक और बालिकाएं

स्कूली बच्चों की प्रस्तुतियाँ :

गोगापीर
तमलियाक्पे लिम (तितली नृत्य)
गरदी नृत्य
घिंडड घूमर
मेवासी चंदला सगाई नृत्य
सिरमौरी नट्टी
बैगा परधौनी नृत्य
भांगड़ा

मोटर साइकलों पर करतब : सीमा सुरक्षा बल के 'जांबाज'

वायुयानों द्वारा सलामी*

गुब्बारे उड़ाना : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग।

*मौसम अनुकूल रहने पर।

CHILDREN'S PAGEANT

Delhi School (Boys and Girls)
Band playing : 'Kargil Ke Veer'
Flag Bearers – Boys and Girls

School Children Items :

Gogapeer
Tamliakpe Lim (Butterfly Dance)
Garadi Dance
Ghindad Ghoomer
Mewasi Chandla Sagai Nritya
Sirmouri Natti
Baiga Pardhauni Nritya
Bhangra

Motor Cycle Display : BSF 'Janbaaz'

FLY-PAST*

Release of Balloons : Indian Meteorological Department.

*If weather conditions permit.

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 57वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। सांस्कृतिक प्रस्तुति, हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की वह झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवमयी अतीत की द्योतक है तथा यह नागरिकों की समृद्ध और खुशहाल भारत के सपनों की अभिलाषा को प्रतिबिंबित करती है।

रंगारंग झांकियों के इस क्रम में, भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा प्रौद्योगिकीय पहलुओं की झलक प्रस्तुत की गई है। इन झांकियों में हमारे प्राकृतिक दृश्यों और वास्तुशिल्पीय धरोहर की सुन्दरता को दर्शाया गया है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India is celebrating the 57th Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilization, cultural diversity and progress symbolizing India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

An array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India. These tableaux capture the beauty of our landscape and architectural heritage.

मैसूर दशहरा

दशहरा पर्व बुराई पर अच्छाई की विजय का द्योतक है। विश्व प्रसिद्ध मैसूर दशहरे का जुलूस, एक शानदार उत्सव है जो महलों के शहर – मैसूर में लाखों सैलानियों को आकर्षित करता है। दशहरा त्यौहार के नौ दिनों की धूमधाम और भव्यता विजय दशमी (उत्सव काल का दसवां दिन) के दिन दशहरा जुलूस के रूप में अपने चरमोत्कर्ष पर होते हैं। पहले, मैसूर के महाराजा 80 किलोग्राम सोने जड़ित 750 किलोग्राम वजन के सुनहरी हौदे पर बैठते थे जिसे जुलूस में रंगबिरंगे रूप से सजे हुए हाथी द्वारा ले जाया जाता था। आजकल, सुनहरे हौदे पर चामुंडेश्वरी देवी विराजमान होती हैं तथा यह जुलूस मैसूर महल से निकाला जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार, चामुंडेश्वरी देवी ने महिषासुर को मारकर इस क्षेत्र के लोगों को शांति प्रदान की थी।

कर्नाटक की झांकी, मैसूर दशहरा जुलूस की झलक प्रस्तुत करती है। परम्परागत नादस्वरम, मैसूर पुलिस बैंड तथा पुरुष कलाकारों का जीवंत 'वीरागासे' नृत्य की टोली को सांस्कृतिक अतिरंजिका के रूप में झांकी पर चित्रित किया गया है।

Mysore Dussehra

Dussehra celebrations signify the triumph of Good over Evil. The world famous Mysore Dussehra Procession is a spectacular event, attracting tourists to the City of Palaces - Mysore. The Pomp and Pageantry that marks the nine day Dussehra festivities culminates in a colourful Dussehra procession on Vijaya Dashmi (the Tenth Day of the festivities). Earlier, the Maharaja of Mysore used to sit on the Golden Howdah (weighing 750 Kgs including 80 Kgs of Gold) carried by a colourfully decorated elephant in a procession. Nowadays, an idol of Goddess Chamundeshwari is placed on the Golden Howdah and taken out in a procession from the Mysore Palace. A legend says that the Goddess Chamundeshwari killed Mahishasura, bringing peace and happiness to the people of the region.

The tableau of Karnataka depicts the Mysore Dussehra procession. The traditional Nadaswaram troupe, the Mysore Police Band and the vibrant '*Veeragaase*' dance by the male artists as part of the cultural extravaganza are depicted on the tableau.

कर्नाटक

Karnataka

10

परम्परा

विविध जातीय और सांस्कृतिक धाराओं से परिपूर्ण असम, उत्कृष्ट परम्पराओं के विस्मयकारी वैभव का खजाना है। महान वैष्णव संत श्रीमंत शंकर देव तथा उनके शिष्यों द्वारा शुरू किए गए वैष्णव–धर्म का भक्ति पंथ, न केवल धर्म के रूप में फला–फूला था बल्कि इसने राज्य की कला, संस्कृति तथा साहित्य को भी बहुत समृद्ध किया। सामाजिक, धार्मिक केंद्रों के रूप में "सतरस" विकसित किए गए थे जबकि प्रार्थना, सांस्कृतिक केंद्र, पुस्तकालय तथा सामाजिक सभाओं के उद्देश्यों का निर्वहन करने के लिए प्रत्येक गांव में "नामघरों' की स्थापना की गई थी। शास्त्रीय नृत्य रूप "सतरीय" तथा नाट्य कला वैष्णव धर्म के अद्वैतवाद सिद्धांत के प्रचार के मूल माध्यम थे।

असम की झांकी में उसकी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर तथा अखंड उत्कृष्ट परम्पराओं को विशेष रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अग्र भाग में, गुरु आसन तथा सात स्वर्गों (सप्त वैकुंठ) के प्रतिरूप स्तूपाकार लकड़ी के ढांचे को चित्रित किया गया है। झांकी के पृष्ठ भाग में भगवान विष्णु के वाहन "गरुड़" को दर्शाया गया है। झांकी के पार्श्व फलकों को असम के सत्रों में वल्कल में संरक्षित शंकर देव के "भागवत पुराण" को दर्शाया गया है।

असम

Parampara

Assam with its diverse ethnic and cultural streams is a repository of amazing wealth of noble traditions. The Bhakti cult of Vaishnavism initiated by the great Vaishnava Saint Srimanta Sankardeva and his disciples had flourished not only as a religion, it also did much to enrich art, culture and literature of the State. The 'Sattras' were developed as the socio-religious centres; while the 'Namghars' in every village were founded to cater for various purposes like prayer, cultural centre, library and venue for social gatherings. The classical dance form 'Sattriya', the music and the drama were the basic medium deployed in propagating the monotheistic philosophy of Vaishnavism.

The tableau of Assam attempts to highlight its rich cultural heritage and the continuation of noble traditions. On the tractor, Guru Asana and a pyramid shaped wooden structure representing the seven heavens (Sapta Vaikuntha) are depicted. The rear portion of the trailer displays Lord Vishnu's vehicle, the 'Garuda'. The panels of the tableau are decorated with the precious scriptures of Sankardeva's 'Bhagavata Purana' on bark preserved in the Sattras of Assam.

Assam

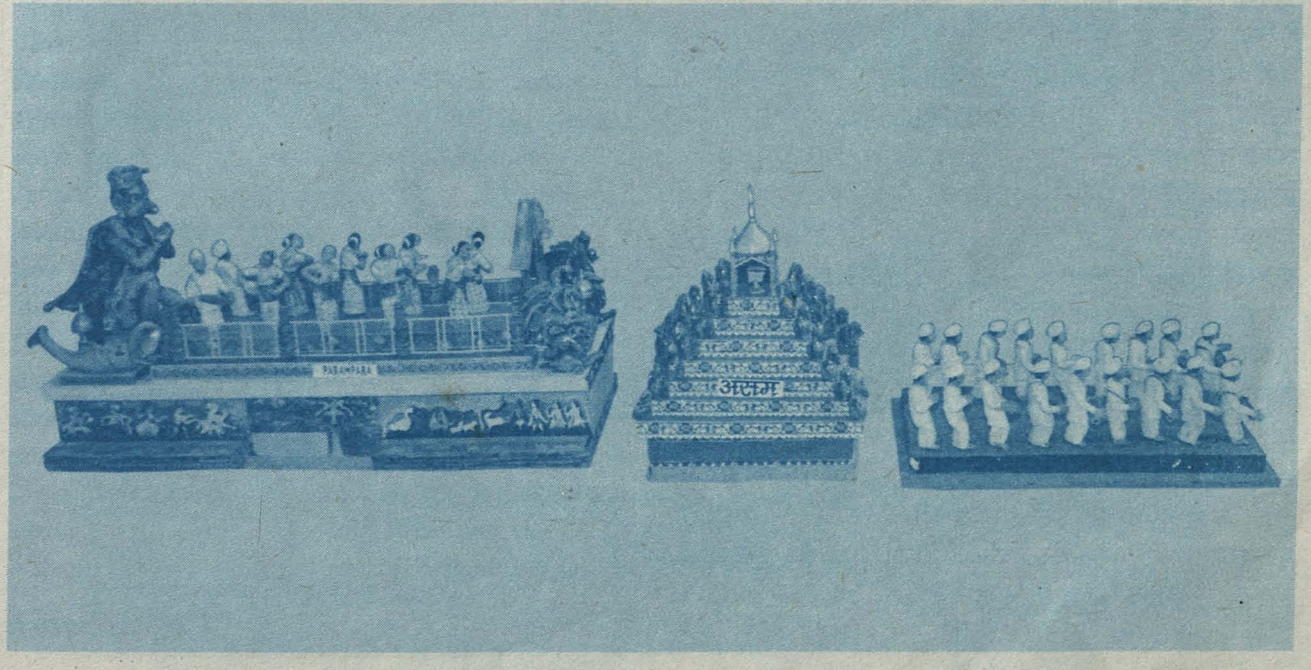

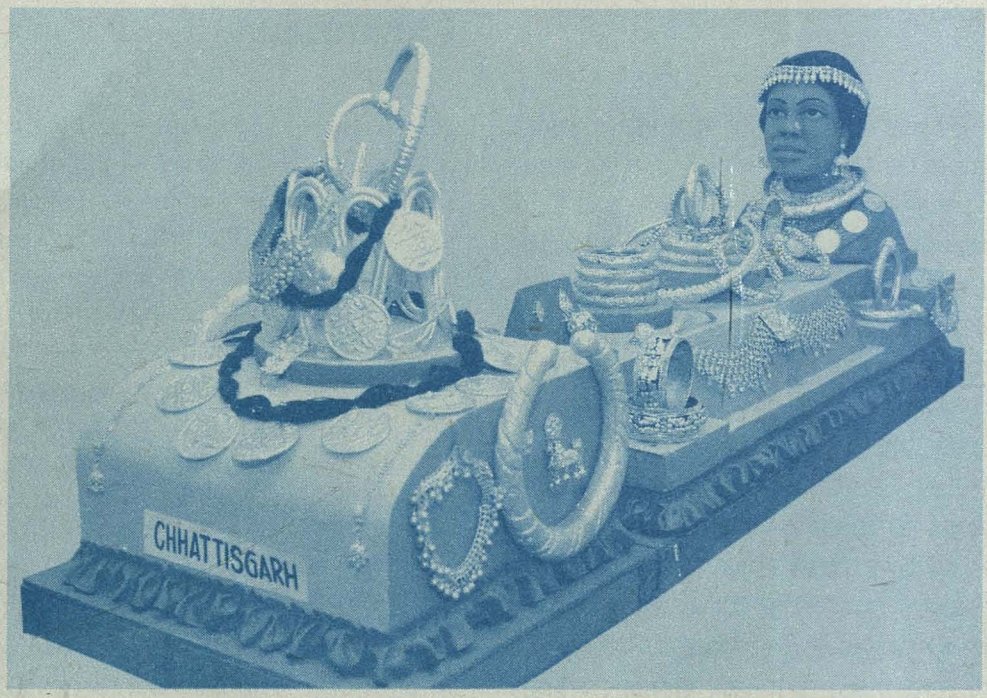

आभूषण

छत्तीसगढ़, कला, संस्कृति तथा शिल्पकारिता के लिए प्रसिद्ध है तथा यह विशेष पोशाकों, ज़ेवरात तथा कलात्मक गहनों के लिए भी जाना जाता है। कलात्मक आभूषण, छत्तीसगढ़ की महिलाओं के श्रृंगार के प्रमुख स्त्रोत हैं।

महिलाएं अपने कानों को 'खिन्वा', 'बारी', 'तितरी', 'टॉप्स', 'झुमका', 'खून्टी', 'कर्णफूल', 'धार' तथा 'स्वातिफूल' से सजाती हैं तथा अपनी नासिका का श्रृंगार करने के लिए 'फूली', 'नथ' तथा 'सरजा' का इस्तेमाल करती हैं। इसके अलावा, 'कांति', 'सुतिया', 'औरीदाना', 'हँसली', 'चेनमाला', 'सुर्री', 'कंठ', 'गजमाल', आदि कुछ कलात्मक गहने हैं जिन्हें गले में पहना जाता है। विवाहित महिलाएं 'एंथी', 'कड़ा', 'ककनी', 'बनुरिया', 'घोड़मुंदरी', 'अंगूठी', 'नगमोरे' तथा 'पहुंची' आदि पहनती हैं। अपनी कमर को सजाने के लिए ये महिलाएं चांदी के तार की परतों से बने 'करघन' तथा 'कमरपट्टा' पहनती हैं। 'पायरी', 'कथर', 'चुल्की', 'देवराहा' आदि छोटे–छोटे घुंघरुओं से युक्त अनेक प्रकार की गोलाकार पायल होती हैं जिनसे छत्तीसगढ़ की महिलाएं अपने घुटनों को सजाती हैं। छत्तीसगढ़ की अविवाहित लड़कियां त्यौहार के मौकों पर इन परम्परागत गहनों को पहनती हैं।

छत्तीसगढ़ की इस झांकी में छत्तीसगढ़ के आकर्षक परम्परागत आभूषणों को प्रदर्शित किया गया है।

छत्तीसगढ़

Ornaments

Chhattisgarh, well known for its art, culture and craftsmanship is also known for its distinctive costumes, jewellery and artistic ornaments. Artistic ornaments are the major source of adornment for the women of Chhattisgarh.

The women decorate their ears with 'Khinwa', 'Bari', 'Titri', 'Tops', 'Jhumka', 'Khoonti', 'Karanphul', 'Dhar' and 'Sewatiphul' and to adorn their nose they use 'Phuli', 'Nath' and 'Sarja'. Artistic Ornaments like 'Kanti', 'Sutia', 'Auridana', 'Hansuli', 'Chainmala', 'Surra', 'Kantha', 'Gajmal' are worn around the neck. Married women wear 'Enthi', 'Kada', 'Kakni', 'Banuria', 'Ghormundri', 'Ring', 'Nagmore' and 'Pahunchi'. To adorn their waist, the women wear 'Karghan' or 'Kamarpatta', which is made of multi layers of Silver wire. 'Payrri', 'Kathar', 'Chulki', 'Dewraha' are various types of round shaped anklets with small bells, which the women wear to decorate their ankles. Unmarried girls of Chhattisgarh wear these traditional ornaments on the festive occasions.

The tableau of Chhattisgarh displays the exquisite beauty of the traditional ornaments of Chhattisgarh.

Chhattisgarh

12

याओशांग होली पाला

मणिपुर के बड़े त्योहारों में से एक, 'याओशांग होली पाला' (होली कलाकारों की टुकड़ी) 'डोल जात्रा' के दौरान, प्रत्येक वर्ष मार्च माह में (मणिपुर पंचांग के –लम्डा' माह के पूर्ण चांद) मनाया जाता है। मणिपुर के ऐतिहासिक महल श्री गोविंद जी मंदिर के सामने पांच दिन के समारोह, लम्डा माह के 8वें दिन से शुरू होते हैं तथा इसके बाद लम्डा के 16वें दिन के अंत तक (डोल जात्रा का दूसरा दिन) मणिपुर के विभिन्न स्थानों से भिन्न–भिन्न याओशांग होली पाला टुकड़ियां आती हैं। पुरुष और महिला कलाकार, भगवान कृष्ण तथा राधिका की प्रशंसा में परम्परागत गीत गाते हैं। गोविंदजी मंदिर के सामने कार्यक्रम प्रस्तुत करते के बाद, टुकड़ियां अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाती हैं। समापन समारोह जिसे 'हलंगकार' कहा जाता है, 'डोल जात्रा' के 6वें दिन मनाया जाता है। गोविंदजी मंदिर पर टुकड़ियां एकत्रित होती हैं तथा 'भगवान विष्णु' की मूर्ति को एक सजे–सजाए रथ में विजय गोविंद मंदिर की ओर ले जाती हैं तथा दिन–भर कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं।

मणिपुर की झांकी में श्री गोविंदजी मंदिर के सामने उत्सव कार्यक्रम को दर्शाया गया है।

मणिपुर

Yaoshang Holi Pala

One of the great festivals of Manipur, 'Yaoshang Holi Pala' meaning "contingent of holi performers" is celebrated every year in the month of March (the full moon of "Lamda" of Manipuri Calendar) in connection with 'Dol Jatra'. Five day long celebrations begin from the 8th day of Lamda followed by different Yaoshang Holi Pala contingents from the different places of Manipur up to the end of 16th day of Lamda. The male and female performers sing the traditional songs in the name of Lord Krishna and Radhika before the Govindajee temple. The contingents go from place to place to show their performance. The closing ceremony known as 'Halangkar' is celebrated on the 6th day of 'Dol Jatra'. Contingents assemble at the Govindajee temple and carry the idol of "Lord Bishnu" in a decorated chariot towards Bijoy Govinda temple and perform throughout the day.

The tableau of Manipur presents the performance of the festival in front of Shree Govindajee temple.

Manipur

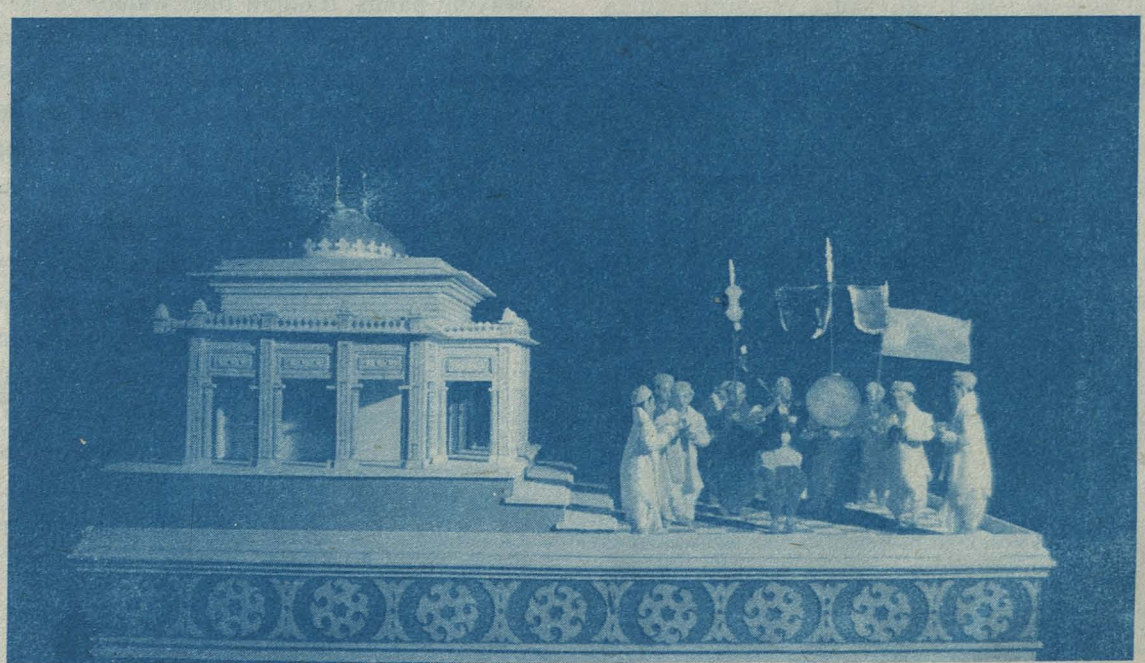

13

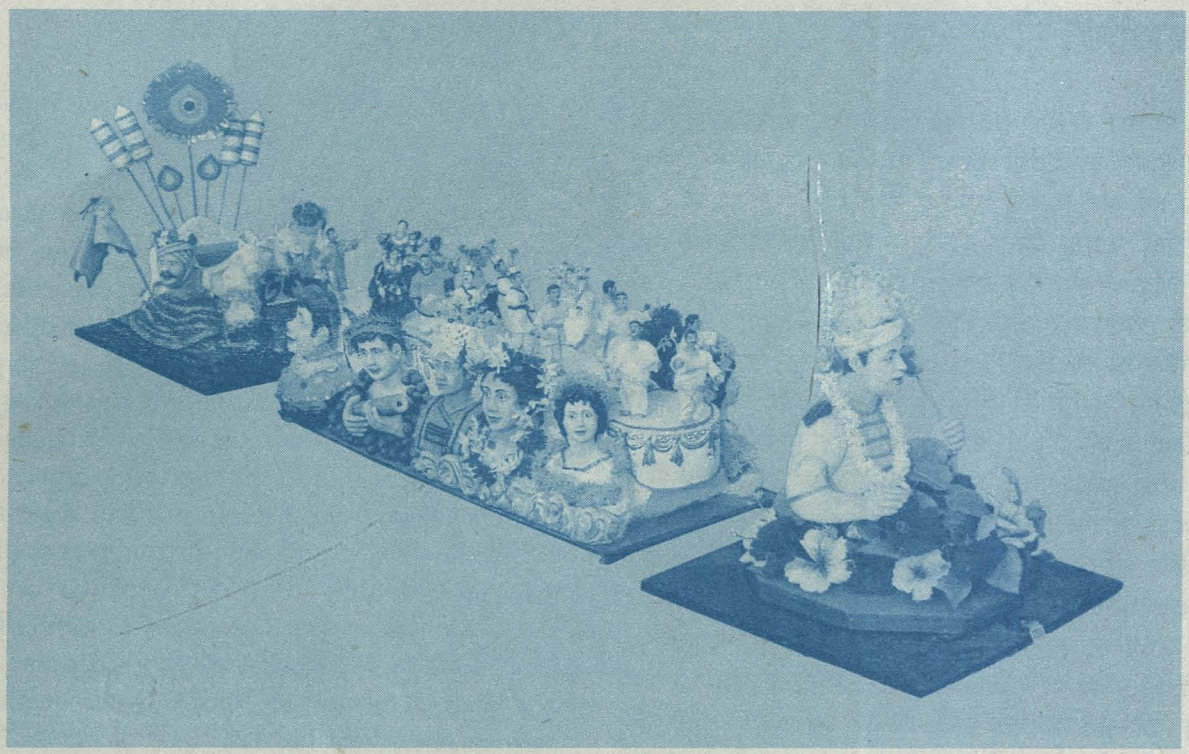

गोवा त्यौहार

गोवा की समृद्ध तथा सांस्कृतिक विविधता अनेक ऐतिहासिक प्रभावों की देन है। पूर्व और पश्चिम का सम्पूर्ण मिश्रण गोवा, श्वेत बालू, झूमते ताड़, नदियों का शांत नीला जल, प्राचीन स्मारक, वन्य जीव तथा अज्ञात अंतः – प्रदेश पर्यटकों को अलौकिक अनुभूति प्रदान करता है। धूप से सराबोर समुद्री किनारे, ऐतिहासिक स्मारक, समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, सांस्कृतिक सद्भाव तथा त्यौहार गोवा के सबसे बड़े आकर्षण हैं।

गोवा की झांकी, गोवा के लोकप्रिय त्यौहारों की झलक दिखाती है। 'संगोड़', –जागर', 'बोन्देरम', 'सिग्मो मेल' गोवा के अन्य लोकप्रिय त्यौहार हैं। गोवा में अद्वितीय तथा विश्व में लोकप्रिय 'कार्निवल' त्यौहार, जिसे फरवरी/मार्च माह में आयोजित किया जाता है में मुखौटाधारियों को गोवा के संगीत की धुन पर नाचते हुए, गोवा की झांकी में चित्रित किया गया है।

Goa Festival

Goa's rich and diversified culture owes its origin to various historical influences. A perfect blend of the East and the West, Goa - with its crystal white sands, swaying palms, tranquil blue waters of the rivers, ancient monuments, wildlife and an unexplored hinterland - provides the tourists with an out of the world experience. The strongest attraction that Goa offers is its sun-drenched beaches, historical monuments, rich cultural heritage, cultural harmony and the festivals.

The tableau of Goa showcases glimpses of the popular festivals of Goa. Some of the popular festivals of Goa are "Sangodd", "Zagor", Bonderam" and "Shigmo Mel". The giant faces on the tableau depict the all embracing cultures of the Goans. Globally popular "Carnival" festival, unique to Goa which is held in the month of February/March and characterised by the masked characters dancing to the Goan music is displayed on the tableau.

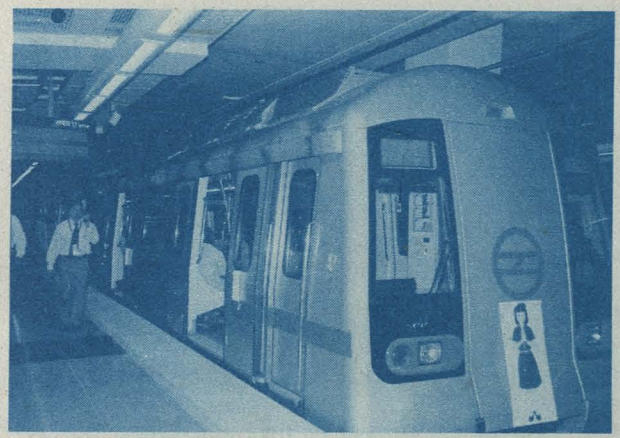

आधुनिकता और परम्परा

दिल्ली की झांकी में प्राचीनता से आधुनिकता तक की यात्रा के दौरान अंकित कुछ संकेत पट्टिकाओं को दिखाया गया है। झांकी के अग्र भाग में, "लाट" के रूप में प्रसिद्ध ऊपर से टिकी हुई एकल पत्थर की चट्टान से काटकर बनाए गए एक विशाल स्तम्भ के साथ एक खण्डर हुए भवन को दर्शाया गया है। 42 फुट लम्बे तथा 12 फुट व्यास का यह स्तम्भ, 250 ई. पू. के आसपास सम्राट अशोक द्वारा स्थापित पत्थर के स्तम्भों में से एक है जिस पर धार्मिक, नैतिक तथा सामाजिक राज्यादेश खुदे हुए हैं। झांकी में प्रदर्शित एक अन्य ऐतिहासिक स्मारक, कोटला फिरोहशाह को यमुना नदी के किनारे पर वर्ष 1354 में बनाया गया था। ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण कश्मीरी गेट का निर्माण मुग़ल सम्राट शाहजहां द्वारा करवाया गया था। कश्मीरी गेट का 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से भी संबंध है।

यह राजधानी शहर जनसंख्या तथा गत कुछ दशकों से यातायात में उल्लेखनीय वृद्धि के अनुभव से गुजर रहा है जिसके परिणामस्वरूप दिल्ली की सड़कों पर अत्यधिक भीड़, धीमी गति, सड़क दुर्घटनाओं में वृद्धि और ईंधन की बरबादी हुई है। केवल मोटर वाहनों से उत्पन्न पर्यावरणीय प्रदूषण का वातावरणीय प्रदूषण में लगभग दो तिहाई योगदान है। इस स्थिति को दुरुस्त करने के लिए सरकार द्वारा की गई पहलों के फलस्वरूप 1 अक्टूबर, 1998 में दिल्ली मैट्रो परियोजना शुरू की गई। वर्तमान में इसकी तीन लाइनें, शाहदरा – रिठाला लाइन 22 कि.मी., विश्वविद्यालय – केंद्रीय सचिवालय 11 कि.मी. (भूमिगत सैक्शन) तथा बाराखंभा रोड – द्वारका लाइन 23 कि.मी. पूर्णतः प्रचालन में हैं जो दिल्लीवासियों को पर्यावरण अनुकूल तथा सुविधाजनक यातायात मुहैया कराती है।

दिल्ली

14

Modernity and Tradition

The tableau of Delhi showcases some of the signposts stamped during its journey from antiquity to modernity. On the tractor, a ruined building along with a huge pillar chiselled out of a single stone perched on top known as the 'Lat', is displayed. This pillar measuring 42 feet in height and 12 feet in diameter is one of the stone pillars erected by the Emperor Ashoka around 250 B.C. with religious, moral and social edicts carved around it. Another historic monument, **Kotla Feroze Shah** showcased in the tableau was built in 1354 on the bank of river Yamuna. Historically important, **Kashmiri Gate** built by the Mughal Emperor Shahjahan has also linkages with the first war of Independence in 1857.

The capital city has experienced phenomenal growth in population as well as vehicular traffic in the last few decades, which resulted in extreme congestion on Delhi roads, ever slowing speed, increase in road accidents, fuel wastage and environmental pollution with motorized vehicles alone contributing to about two third of atmospheric pollution. To rectify this situation, initiatives taken by the Government has led to the start of Delhi Metro Project on 1st October, 1998. As of now, three lines - 22 kms. long Shahdara to Rithala line, 11 kms. long under-ground section Vishwavidyalaya to Central Secretariat and 23 Kms long Barakhamba Road to Dwarka are fully operational providing the Delhites with a comfortable and environment friendly mode of transport.

Delhi

15

फूलों की घाटी

उत्तरांचल का क्षेत्र वस्तुतः प्रकृति की देन है, यह एक अद्वितीय फूलों का खजाना तथा एक जैव विविधता वाला अंचल है। "फूलों की घाटी" को हाल ही में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है।

पुष्पवती नदी के आवाह क्षेत्र को सुरक्षित रखने के लिए सन् 1982 में हिमालय क्षेत्र में एक राष्ट्रीय पार्क बनाया गया था। सुदूर हिमालय के इस हरी घास वाले क्षेत्र की ओर सबसे पहले ब्रिटिश पर्वतारोही फ्रेंक एस स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'दि वेली आफ फ्लावर' (1938) से विश्व का ध्यान आकर्षित किया था। "ब्रह्म कमल" (सौसुरिया ओवलता) की उत्पत्ति वाला क्षेत्र फूलों की घाटी एक हिमनद गलियारा है जिसकी लम्बाई 8 किलोमीटर तथा चौड़ाई 2 किलोमीटर है। अपने नाम के अनुरूप, वर्षा ऋतु के दौरान इस घाटी में जंगली फूलों की चादर सी बिछ जाती है। अनेक प्रजातियां जो इस अद्वितीय पारिस्थितिक वातावरण के साथ अस्तित्व में हैं, उनमें दर्शकों में अत्यंत लोकप्रिय इसी क्षेत्र में पैदा होने वाली हिमालयन ब्लू पॉपी, प्रिमुला की असाधारण किस्में तथा ओरचिड जो जून माह में खिलता है और इमपेसियन्स, कोब्रा लिलि, पोटेनसिलास एवं कम्पानुला हैं जो जुलाई और अगस्त माह में घाटी को गुलाबी, लाल और बैंगनी रंग से रंग देते हैं। उत्तरांचल की झांकी में "फूलों की घाटी" – की अद्वितीय सुन्दरता, प्राकृतिक सुन्दरता और मनमोही पुष्प, विविधता को दर्शाया गया है।

Valley of Flowers

Uttranchal is gifted with a truly magnificent area and a unique floral treasure and biodiversity zone, known as **'The Valley of Flowers'**, recently declared as the World Heritage site by the UNESCO.

Created in 1982 as a national park in the Himalayas to protect the catchment area of the Pushpavati River, this remote Himalayan meadow was first time brought to the attention of the World by a British mountaineer Frank S. Smyth in his book *'The Valley of Flowers'* (1938). Home of 'Brahm Kamal' (*Saussurea Obvallata*) - the Valley of Flowers is a glacial corridor measuring eight kilometres in length and two kilometres in width. True to its name, the Valley is carpeted with wild flowers during the monsoon season. Of the many species which coexist in this unique eco-system and the most popular among visitors are the Himalayan blue poppy native to the region, the uncommon varieties of primula and orchid which bloom during June, cobra lily, potentillas, and campanula, which paint the valley pink, red, and purple during the months of July and August. The tableau of Uttranchal portrays the unique beauty of the 'Valley of Flowers'- its landscape, unparallel topographical charm, outstanding natural beauty and captivating floral biodiversity.

बाँस

मिजोरम–भारत के पूर्वोत्तर सीमा पर स्थित ऊंची–ऊंची पहाड़ियों वाला क्षेत्र है जो भिन्न–भिन्न प्रकार के वनस्पति एवं जीव–जन्तुओं से समृद्ध है। वनस्पति विविधता के विशाल खजाने में, बाँस की बहुलता और विभिन्न किस्मों के कारण इसका अपना एक विशेष महत्व है। इसके विशाल क्षेत्र, प्राकृतिक बाँस से भरपूर हैं। बाँस की प्रचुर पैदावार के कारण, मिजोरम के लोग प्राचीनकाल से ही बाँस पर अत्यधिक निर्भर रहे हैं। मिजो लोग–चाहे घर बनाने का काम हो या उपयोगी वस्तुएं बनाना हो, अथवा कृषि कार्यकलाप हो, बाँस का आसानी से उपयोग करते हैं क्योंकि बाँस सदैव हर जगह उपलब्ध होता है। वर्षों से, बाँस की काम में आने वाली छोटी–छोटी वस्तुएं बनाने वाले मिजो हस्तशिल्प ने अब कलाकृतियों का रूप ले लिया है। नई जरूरतों, जीवन–शैली तथा बदलते समय के अनुसार सृजनात्मकता को अपनाने तथा इसमें सुधार करने की कला का बाँस–कला दस्तकारी से गहरा संबंध है। यह मिजो लोगों के लिए बुनियादी शक्ति का आधार है।

मिजोरम की इस झांकी में बाँस के साथ–साथ मिजोरम के लोगों की जीवनशैली तथा मिजोरम में लघु एवं कुटीर उद्योग के विकास में बाँस की महत्वपूर्ण भूमिका का वास्तविक चित्रण है।

मिजोरम

Bamboo

16

Mizoram, land of the highlanders - tucked in the North-Eastern fringe of India - is a home to the distinct and rich flora and fauna. Among its vast treasure-trove of floral diversity, bamboo occupies a special status because of its abundance as well as variety. Vast areas are found full of natural bamboo plants. Due to abundance of bamboo growth, people of Mizoram have been heavily dependent on bamboo from the days of the distant past. Be it a matter of house building or making of utility items or agricultural activities, the ubiquitous bamboo is always there. The Mizo handicrafts have over the years transformed from mere functional pieces into the works of art. This ability to improve and adapt creativity to new needs, lifestyles and changing times has to do with the bamboo art and craft being an anchor of originality and strength to the Mizos. The bamboo crafts form an intrinsic part of Mizo life style.

The tableau of Mizoram presents bamboo vis-à-vis Mizo way of life and also the significant role played by bamboo in the development of small and cottage industries in Mizoram in its true colour and spirit.

Mizoram

पिपली की कलाकारी

उड़ीसा की इस झांकी में पिपली के रंगीन गोटा–पट्ठा कारीगरी को प्रदर्शित किया गया है। यह कारीगरी लम्बे समय से दर्शकों को आकर्षित करती रही है तथा दस्तकारी को लाभ पहुंचाती रही है। इस शिल्पकारी का केंद्र, पिपली गांव, भुवनेश्वर–पुरी–कोर्णाक के सुनहरे त्रिकोण में बसा है। गली के दोनों ओर छोटी–छोटी कार्यशालायें हैं तथा जवान और बूढ़े शिल्पकार, चमकदार पृष्ठभूमि पर रंगीन सूती कपड़ों को काटते हुए तथा उन्हें सिलते हुए देखे जा सकते हैं। पारंपरिक गोटा–पट्ठा कार्य में 'चन्दुआ', 'छत्ती', 'त्रासा', 'अल्लाट', 'अधोनी', 'मन्दन्त' और 'बाना' शामिल हैं तथा डोला यात्रा एवं कार उत्सव में इनका उपयोग किया जाता है। इस कलाकारी के उत्पाद, धार्मिक समारोह के साथ–साथ घरेलु उपयोग जैसे वाल हैंगिंग, लैम्प शेड आदि से संबद्ध है। एक रंग चित्र कलाकारी जिसका उपयोग गार्डन अम्ब्रेला तैयार करने में होता है पर्यटकों की विशेष पसंद है।

उपयोगिता संबंधी उत्पादों के लिए बढ़ती मांग में परिवर्तन हो सकता है परंतु मौलिक गोटा–पट्ठा उत्पाद जैसे 'चन्दुआ', 'छत्ती', 'त्रासा' और 'अल्लाट' का उत्पाद जारी रहेगा क्योंकि यह राज्य के धर्म और संस्कृति से जुड़ा है। इस गहन और आकर्षक कलाकारी के लिए उड़ीसा के पर्यटन मानचित्र में पिपली का अपना एक विशेष स्थान है।

उड़ीसा

Art Work in Pipili

The tableau of Orissa showcases the colourful appliqué craft of Pipili, which has since long appealed to the visitors and benefited to the handicrafts. The centre of this craft - the village of Pipili - is situated on the golden triangle of Bhubaneshwar - Puri - Konark. There are small workshops on both sides of the street and craftsmen young and old can be seen cutting colourful cotton pieces and stitching onto equally bright backgrounds. Among the traditional appliqué works 'Chandua', 'Chhati', 'Trasa', 'Allata', 'Adhoni', 'Mandant' and 'Bana' are used in the "Dola Yatra" and the "Car Festival". The products of this work of art are associated with the religious ceremony as well as domestic use like wall hanging, lampshades etc. Tourists have special choices for monochrome art used in preparation of garden umbrella.

With the demand for more of utilitarian products, changes may come but principal appliqué products like 'Chandua', 'Chhati', 'Trasa' and 'Allata' will continue as it is associated with religion and culture of the State. Pipili occupies an important place in the tourist map of Orissa for its intricate and attractive work of art.

Orissa

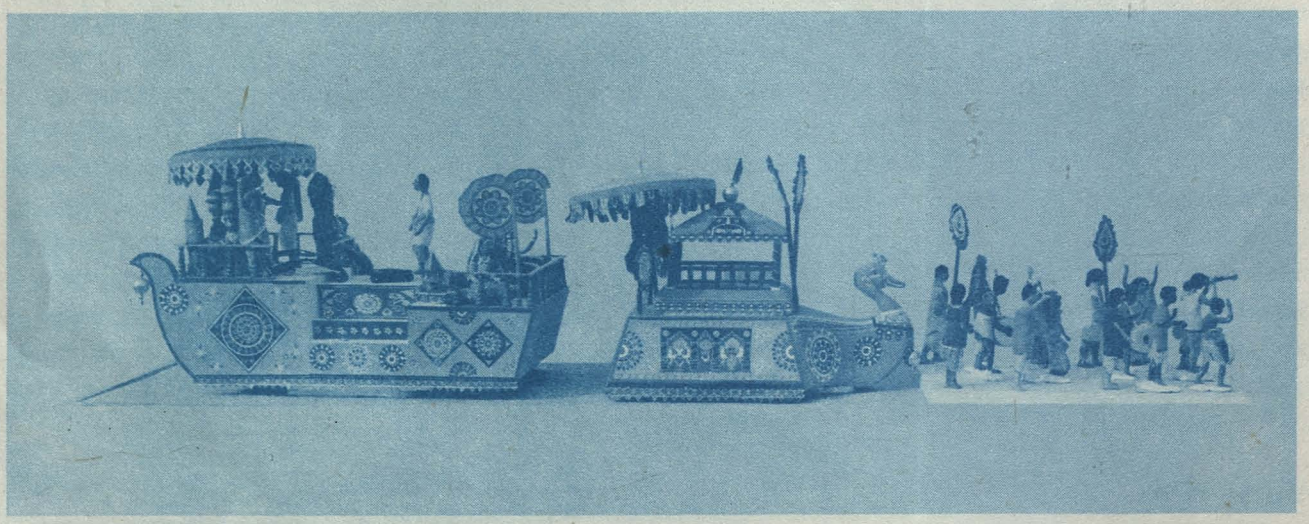

मेघालय की गुफायें

मेघालय–सुंदर श्वेत जलप्रपातों और विस्मयकारी गुफाओं का छुपा खजाना है। राज्य के लगभग सभी जिलों में स्थित गुफायें, मेघालय की प्राकृतिक सुंदरता पर चार चांद लगाते हैं। विभिन्न बनावट की ये आरोही निक्षेप तथा निलम्बी निक्षेप गुफायें, वास्तव में प्रकृति की देन तथा आश्चर्य हैं। छोटी–बड़ी गुफाओं की भूमि मेघालय, गुफा खोजियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। राज्य में 200 से भी अधिक गुफायें हैं इनमें से अधिकांश का पता लगाया जाना है तथा उनका मानचित्र बनाया जाना है। जिन गुफाओं का पता लगाया गया है तथा सर्वेक्षण किया जा चुका है उनमें से पांच गुफायें भारतीय उप–महाद्वीप की सबसे बड़ी गुफायें हैं। कुछ सुप्रसिद्ध गुफायें क्रेम मवंलुह, क्रेम फिल्ल्ट, क्रेम मवस्यंरम, क्रेम दम, क्रेम कोत्स्ताई, स्यंदयी केव, लुम्सनोग केव और सिजु केव हैं।

इस छोटे राज्य में, संभवतया देश के किसी अन्य राज्य से गुफा की क्षमता अधिक है। मेघालय की इस झांकी में प्राकृतिक सौंदर्य की समस्त क्षमताओं वाले राज्य के प्राकृतिक आश्चर्य को दर्शाया गया है।

मेघालय

Caves of Meghalaya

Meghalaya is a treasure-trove of nature with its beautiful silvery cascades and awe-inspiring caves. Caves located in almost all the districts of the State add to the abundance of natural beauty of Meghalaya. These 'Stalactite' and 'Stalagmite' caves of various formations are truly nature's gift and wonder. Meghalaya is a land of caves and caverns. There are over 200 caves in the state, many of which are yet to be explored and mapped. Five among the already explored and surveyed caves have the distinction of being the longest known caves in the Indian sub-continent. Some of the well-known caves are 'Krem Mawmluh', 'Krem Phyllut', 'Krem Mawsynram', 'Krem Dam', 'Krem Kotstai', 'Syndai Cave', 'Lumsnong Cave' and 'Siju Cave'.

This tiny state probably has more caving potential than any other State in India. The tableau of Meghalaya depicts the natural wonder of the State having all the potential of natural beauty.

Meghalaya

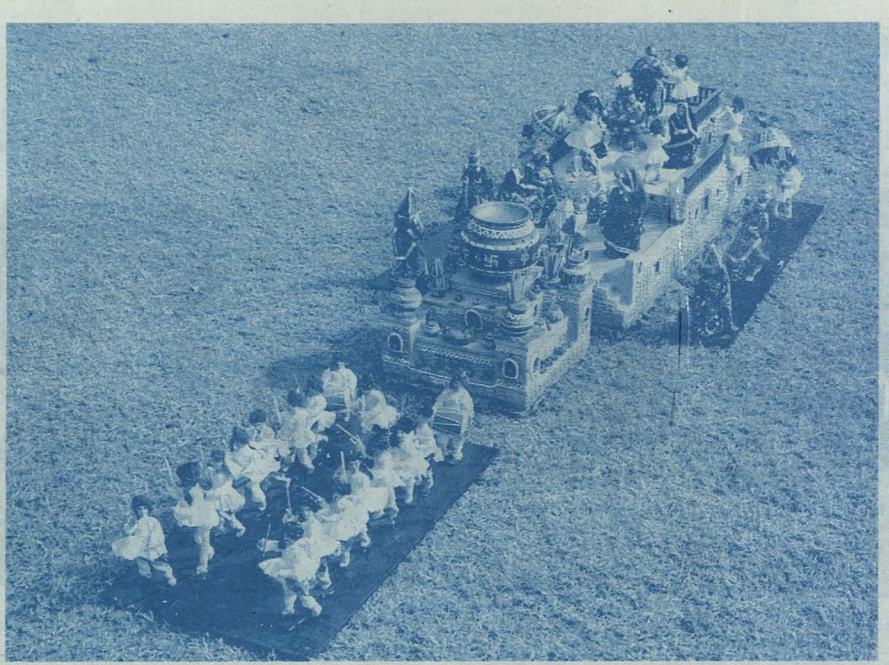

नवरात्रि

गुजरात में हिंदू पंचांग के बारहवें माह अश्विन के नवरात्रों के दौरान गरबा नृत्य उत्सव मनाया जाता है। इन नौ दिनों को 'नवरात्रि' के रूप में मनाया जाता है अर्थात् नौ रातें विशेष रूप से माँ दुर्गा तथा अन्य शक्ति देवियों की पूजा–पाठ के लिए समर्पित की जाती है। प्रथम दिन से अंतिम दिन तक शक्ति के इस विशेष रूप का धार्मिक आह्वान और पूजा की जाती है। ये देवियां–कुमारी, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चंद्रिका, शाम्भवी, दुर्गा तथा सुभद्रा हैं।

'गर्बो' शब्द 'गर्भदीप' से निकला है जिसका अर्थ है मिट्टी के घड़े के साथ एक दीप। अब गर्बा शब्द का प्रयोग माँ भगवती की प्रशंसा में उपासना गीत के लिए किया जाता है, ये गीत, पुरुषों और महिलाओं द्वारा गोल घेरे में ढोल और सारंगी के साथ तथा तालियां और डांडियों की पूर्ण लय तथा पांव की ताल के साथ नृत्य करके गाए जाते हैं। गुजरात की इस झांकी में नवरात्रि उत्सव को दर्शाया गया है। झांकी के अग्र भाग में एक 'गड़वा दीप' रखा गया है। पश्य भाग में गुजरात के लोकप्रिय नृत्य 'गरबा' के साथ नवरात्रि उत्सव की झलकियां प्रस्तुत की गई हैं।

Navratri

Navratri Garba Dance Festival is held in Gujarat during the first nine days of the lunar half of the month of Asvina - the twelfth month of the hindu calendar. These nine days are celebrated as 'Navratri' - nine nights especially devoted to the ceremonial worship of the Goddess 'Durga' and other Shakti deities. Right from the first day to the last day, a special form of this 'Shakti' is religiously invoked and worshipped. These deities are 'Kumari' 'Trimurti', 'Kalyani', 'Rohini', 'Kali', 'Chandrika', 'Shambhavi', 'Durga' and 'Subhadra'.

The term 'Garbo' originates from the word 'Garbhadeep' - an earthen pot with a lamp. It is now used for a devotional song in praise of the goddess, sung with a circular dance performance by men and women to the accompaniment of instruments such as 'Dhol' and 'Shehnai', with perfect rhythms of claps or dandies and intricate foot steps. The tableau of Gujarat depicts the Navratri festival. On the tractor, a huge 'Garbhadeep' is displayed. On the trailer, a glimpse of the Navratri festival is shown along with the famous 'Garba' - the popular dance from Gujarat.

गुजरात ***Gujarat***

20

सेल्युलर जेल–१०० वर्ष

सेल्युलर जेल जो अब राष्ट्रीय स्मारक है, स्वतंत्रता आंदोलन का मंदिर है। यह आने वाली पीढ़ी के लिए असीम प्रेरणा के अनवरत स्रोत के रूप में आज भी खड़ा है। सेल्युलर नाम, इसकी अद्वितीय विशेषता से पड़ा था इसमें बिना शयनागार कुल मिलाकर केवल 698 सेल थे। सेल्युलर जेल को विशालकाय स्टारफिश जैसा डिजाइन किया गया है जिसके केंद्र बिंदु से बाहर को निकले हुए सात बड़े स्पर्शिका या पंख हैं। इस जेल का निर्माण वर्ष 1896 में आरंभ किया गया और 1906 में पूरा हुआ। सेल्युलर जेल इतनी भयावह है कि प्रत्येक क्षण किसी निर्दोष के लिए भी कोई भयानक अनुभव प्रतीक्षित था।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने 30 दिसंबर 1943 को अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के दौरे के दौरान जिमखाना मैदान में भारतीयों की एक विशाल रैली को संबोधित किया और राष्ट्रीय ध्वज फहराया था। उन्होंने सेल्युलर जेल का दौरा भी किया जहां स्वतंत्रता सेनानियों, राजनीतिक बंदियों और आंदोलनकारियों को अंग्रेजों द्वारा बंदी बनाया गया था। अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की इस झांकी में सेल्युलर जेल और स्वतंत्रता में इसके प्रतीकात्मक महत्त्व को दर्शाया गया है।

Cellular Jail - 100 Years

The Cellular Jail, now National Memorial, is the temple of freedom struggle, which till today stands as a source of inspiration to the generations to come. The name 'Cellular' is derived from its unique feature, it has only 698 Cells in all without any dormitories. The Cellular Jail is designed like a gigantic starfish with seven massive tentacles or wings fanning out from a central hub. The construction of the jail was taken up in the year 1896 and was completed in 1906. The Cellular Jail is so dreadful that in every moment, some horrible experience awaited even for the innocent.

Netaji Subhash Chandra Bose during his visit to the Andaman Islands on 30th December 1943 had addressed a mass rally of the Indians at the Gymkhana Ground and formally hoisted the National Tri-colour to the accompaniment of the National Anthem. He also visited the Cellular Jail where Indian freedom fighters, political prisoners and revolutionaries used to be detained by the British. The tableau of the Andaman and Nicobar Islands showcases Cellular Jail and symbolic significance of its historic liberation.

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह

Andaman and Nicobar Islands

21.

थेरोट्टम (रथ उत्सव)

"थेरोट्टम" का तात्पर्य तमिलनाडु में मंदिर उत्सवों के दौरान सैकड़ों लोगों द्वारा शारीरिक रूप से प्रभावशाली और विशालकाय मंदिर रथ (थेर) को खींचना है। वास्तव में, आज भी देखने में रमणीय लगता है। यह शानदार दृश्य, प्रत्येक वर्ष न केवल राज्य के लाखों दर्शकों को आकर्षित करता है बल्कि लोक कला जो प्रत्येक "थेरोट्टम" की हृदय तथा आत्मा होती है, के माध्यम से देश के विभिन्न भागों से भी लोगों को आकर्षित करता है। यह उत्सव, श्री अंदल जो भगवान के परम–भक्तों में से एक है, द्वारा भगवान का सत्कार करने के लिए मनाया जाता है।

तमिलनाडु की इस झांकी में थेरोट्टम उत्सव जो अपने वैभव के सांस्कृतिक उल्लास में अनन्य है, को प्रस्तुत किया गया है। झांकी के अग्र भाग में तमिलनाडु के प्रसिद्ध श्रीविल्लीपुथूर मंदिर के मंदिर रथ को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। झांकी के पिछले भाग में 'श्रीविल्लीपुथूर' मंदिर के रंगारंग 'विमानम' का प्रतिरूप दर्शाया गया है। "नारूयान्दी मेलम" के मधुर संगीत, मोर नृत्य, सांड नृत्य, बाघ नृत्य, कावड़ी, करगम और कुम्मी का संस्लेशण किया गया है।

तमिलनाडु

Therottam (Cart Festival)

"Therottam", meaning the pulling up of an impressive and gigantic temple cart ('Ther') physically by hundreds of people during temple festivals in Tamil Nadu, is indeed a beautiful sight to watch even today. The grand spectacle draw lakhs of people every year not only from the state but folk arts - the heart and soul of every "Therottam" also attracts people from the different parts of the country. This festival is celebrated to pay obeisance to the Lord by Sri Andal, one of his ardent devotees.

The tableau of Tamil Nadu presents "Therottam" festival - a cultural exuberance unique in all its splendours. The tractor portion of the tableau depicts an exact replica of the temple cart of the famous 'Srivilliputhur Temple' in Tamil Nadu. The rear portion of the trailer depicts a replica of the colourful 'Vimanam' at the 'Srivilliputhur' temple. 'Peacock dance', 'Bull dance', 'Tiger dance', 'Kavadi', 'Karagam' and 'Kummi' are synthesized in the soul stirring music of "Nayyandi Melam".

Tamil Nadu

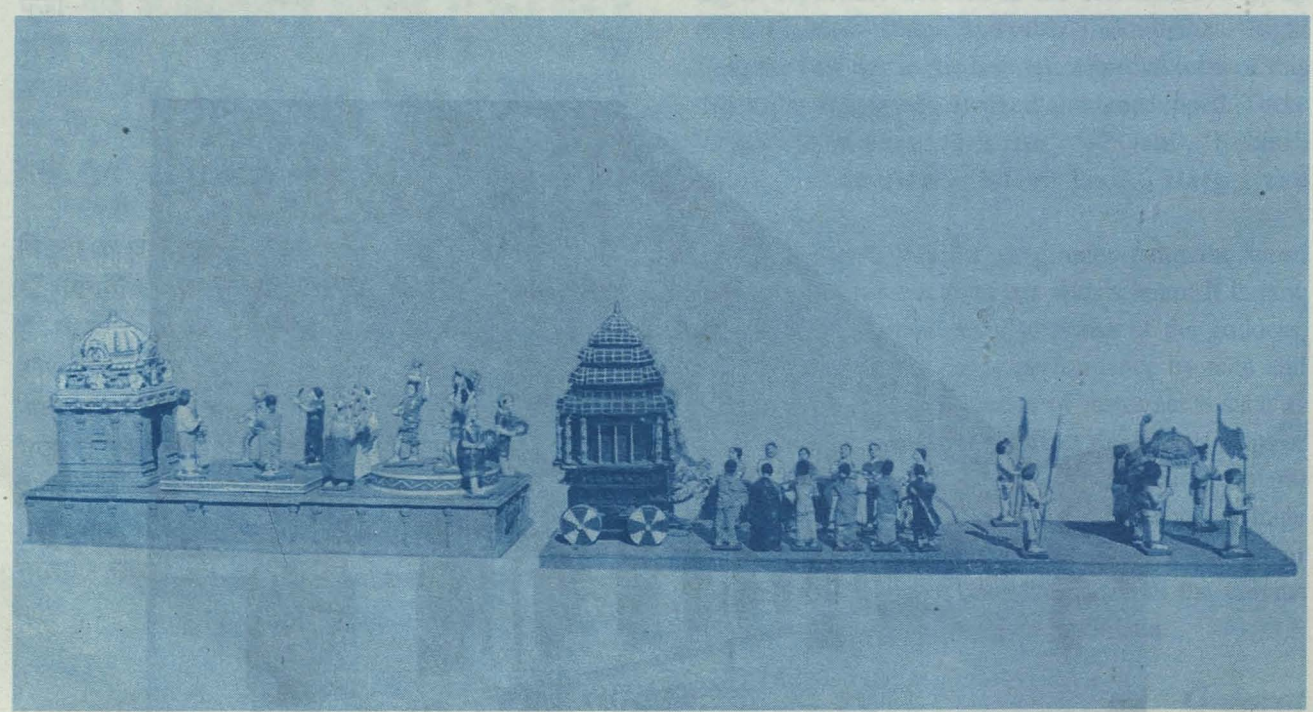

22

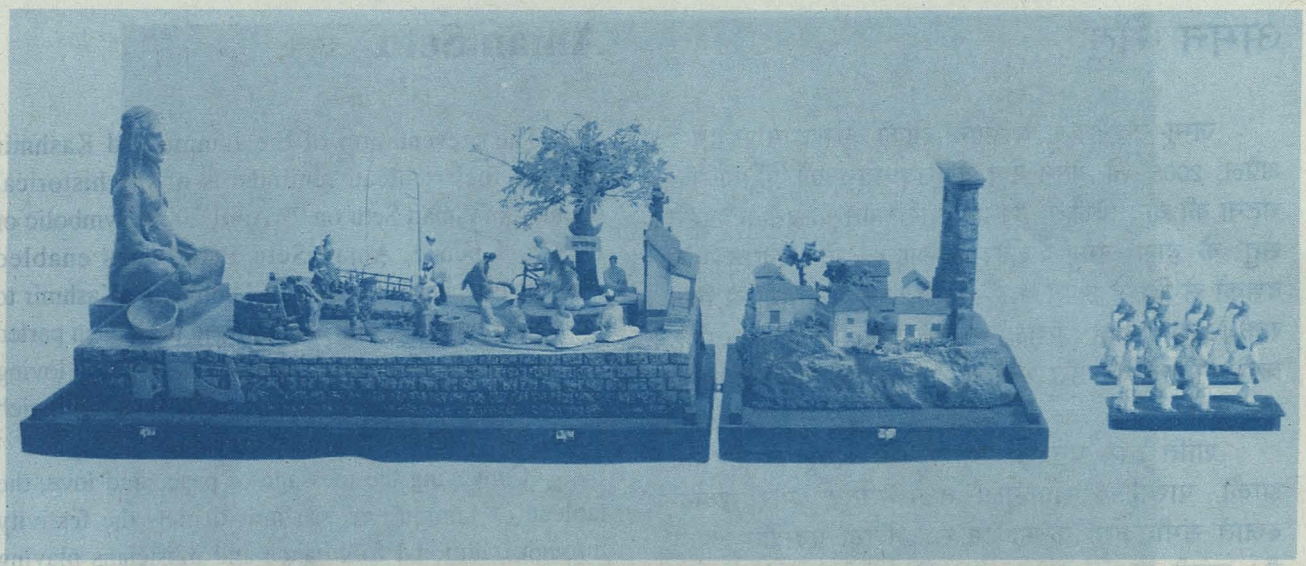

संत गाडगे बाबा स्वच्छता अभियान

'संत गाडगे बाबा स्वच्छता अभियान' अथवा 'ग्रामीण सफाई अभियान' ने ग्रामीण महाराष्ट्र के ग्रामवासियों, पंचायतों और ग्रामीणों में सामुदायिक भावना की आश्चर्यजनक अनुभूति प्रदान की है। राज्य प्रायोजित इस अभियान के उद्देश्य सामुदायिक पहल के माध्यम से एक स्वच्छ वातावरण बनाने के लिए ग्रामीणों में प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करना है। जिला, संभाग और राज्य स्तर पर चलाए गए इस अभियान में विजयी गांव को सरकार पुरस्कृत करती है। शांत और लगभग अदृश्य इस सामाजिक क्रांति ने सामुदायिक भावना को जागृत करते हुए हजारों स्त्री, पुरुष और बच्चों को शामिल करते हुए गंदगी से अभिभूत गांवों को स्वच्छ द्वीप में बदल दिया। गत वर्ष के मिशनरी प्रचारक संत गाडगे बाबा, जिन्होंने स्वच्छता और विवेकपूर्ण विचार के महत्व का प्रचार करने में अपना जीवन समर्पित कर दिया, के नाम से वर्ष 2000 में एक बार के कार्यक्रम के रूप में किया गया अभियान अब राज्य में एक वार्षिक कार्यक्रम बन गया है। यह सूचना, मनोरंजन और संचार का सबसे बड़ा अभियान बन गया है। अनुमान है कि अभियान के प्रथम वर्ष में ही प्रतिक्रिया के रूप में राज्य सरकार द्वारा निवेशित 6 करोड़ रुपए के निवेश के साथ समुदायों द्वारा एकत्रित 200 करोड़ रुपए का कुल निवेश किया गया।

महाराष्ट्र की इस झांकी के अग्र भाग में अभियान के माध्यम से परिवर्तित गांव को दिखाया गया है और पिछले भाग में संत गाडगे बाबा की विशालकाय मूर्ति को प्रदर्शित किया गया है।

महाराष्ट्र

Sant Gadge Baba Swachata Abhiyan

The 'Sant Gadge Baba Swachata Abhiyan' or the 'Clean Village Campaign' has infused a tremendous sense of community spirit among villagers, Panchayats and village organizations in rural Maharashtra. State sponsored campaign is aimed at promoting a competitive spirit among villagers to create a clean environment through the community's initiatives. The Government rewards winning villages in the campaign at the district, division and state level. A silent and almost invisible social revolution has ignited the community spirit involving thousands of women, men and children, transforming dirt-ridden villages into islands of cleanliness. Named after a missionary of yester years Sant Gadge Baba who had devoted his life propagating importance of cleanliness and rational thinking, the campaign started in the year 2000 as one time programme, has now become an annual event in the State. It has turned out to be the biggest information, entertainment and communication campaign. It is estimated that in response to the campaign in its first year itself, the total investment mobilized by communities was worth Rs. 200 crores with an investment of Rs. 6 crores by the state government.

The tableau of Maharashtra showcases a village transformed through the campaign and a larger-than-life statue of Sant Gadge Baba.

Maharashtra

23

अमन सेतु

जम्मू–कश्मीर राज्य अपनी झांकी के माध्यम से हमें 7 अप्रैल, 2005 को अमन सेतु के उद्घाटन की ऐतिहासिक घटना की याद दिलाती है। प्रेम और शांति के प्रतीक 'अमन सेतु' के द्वारा जम्मू–कश्मीर के भावुक लोग विगत पांच दशकों से बिछड़े अपने भाई–बंधुओं, सगे–संबंधियों से मिल सके। इस तरह समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाली, ऋषि–मुनियों की इस भूमि के शांतिप्रय लोगों का सपना पूरा हुआ।

शांति तथा प्रेम का संदेश देती जम्मू–कश्मीर की झांकी, पारंपरिक लोकनृत्य तथा 'संतूर' और 'रबाब' बजाते संगीतकारों के माध्यम से खुशियां प्रदर्शित करती हैं। झांकी के मध्य में, चारों ओर से पेड़–पौधों तथा जीव–जंतुओं से घिरे अमन सेतु का ढांचा तथा उसके आगे पुल पर जम्मू–कश्मीर के लोग अपनी पारंपरिक वेशभूषा में चलते हुए तथा सीमा के दूसरी ओर के लोगों से गले मिलते हुए दिखाई देते हैं। अंत में झांकी के पश्च भाग में, इतिहास का हिस्सा बन गई बस यात्रा को प्रतीकात्मक रूप में दर्शाया गया है। झांकी, मन को स्फूर्ति देने वाले पार्श्व संगीत के मधुर लोकगीत "बुम्बरो–बुम्बरो शाम रंग बुम्बरो" से ओतप्रोत है।

जम्मू–कश्मीर

Aman Setu

The presentation of the Jammu and Kashmir through their tableau reminds us of the historical opening of Aman Setu on 7th April 2005. Symbolic of love and peace, Aman Setu Bridge has enabled emotionally charged people of Jammu and Kashmir to meet their brethren, kith and kin who have been parted for the last five decades. The dreams of peace loving people from the land of Rishis and Munis with rich cultural heritage have thus been realised.

Conveying the message of peace and love, the tableau of Jammu and Kashmir depicts the festivity through traditional folk dance and musicians playing Santoor and Rabab. The structural post of Aman Setu followed by bridge, where people of Jammu and Kashmir in their traditional dresses walking and embracing their counterparts surrounded with vegetation, flora and fauna are seen in the middle of tableau. Lastly, the bus journey which has become the part of history is shown symbolically at the rear portion of the trailer. The tableau is enriched with the popular folklore '*bumbro-bumbro sham rang bumbro*'.

Jammu and Kashmir

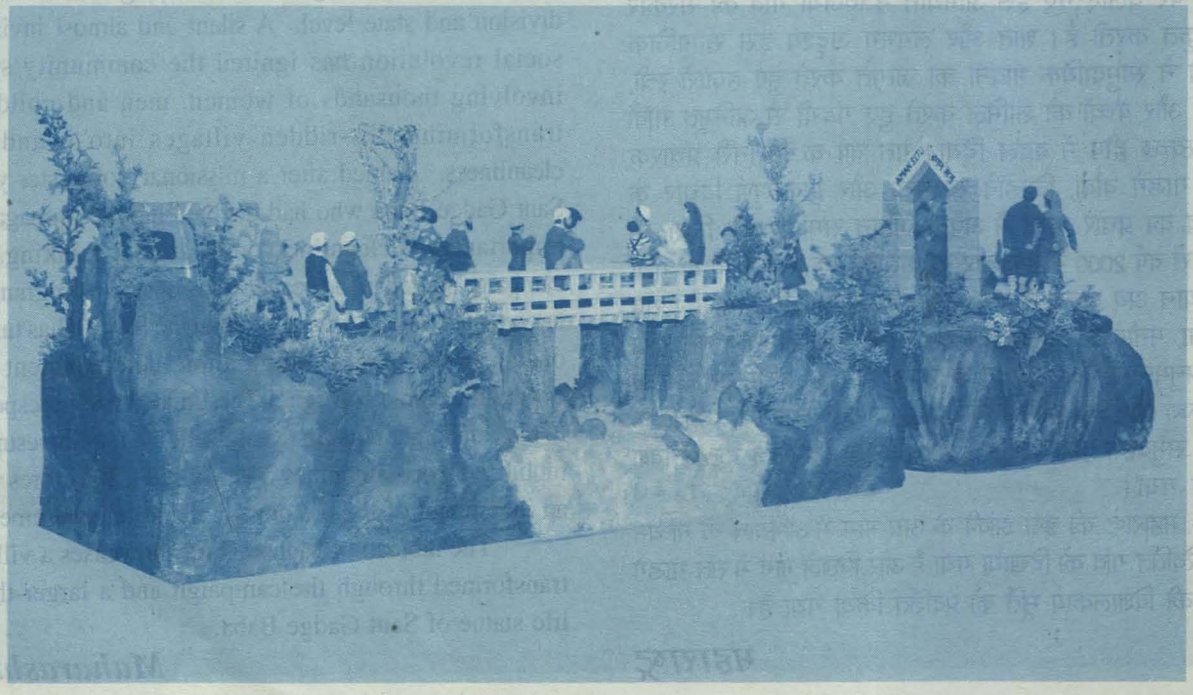

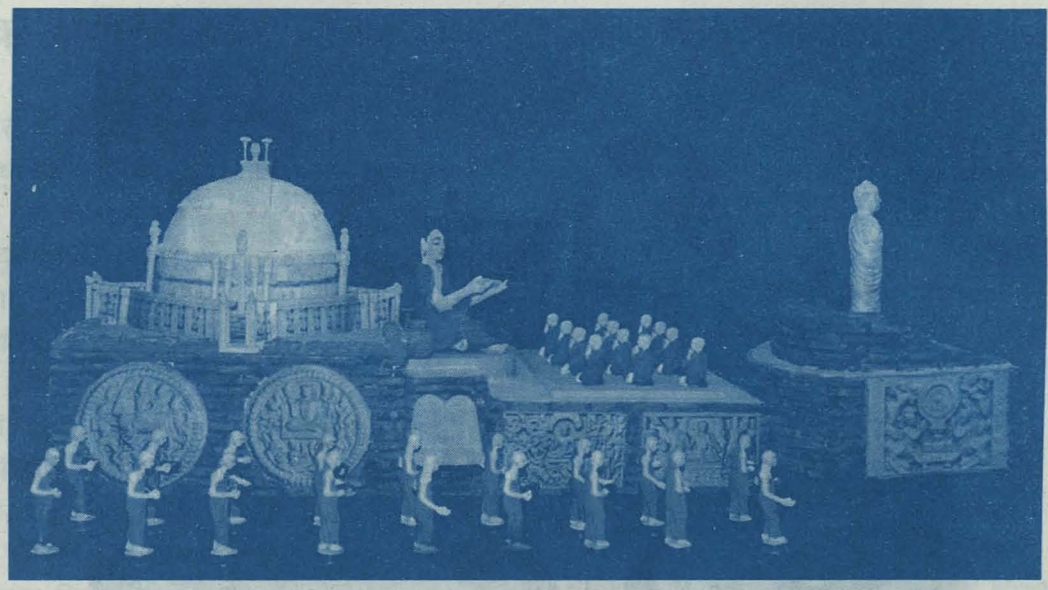

आंध्र प्रदेश की बौद्ध विरासत

एक सहस्त्राब्दि से ज्यादा समय से, प्राचीन आंध्र प्रदेश के लोगों के जीवन पर बुद्ध की शिक्षाओं का गहरा प्रभाव पड़ा। इस महान गुरू की प्रबुद्ध प्रेरणा ने तत्कालीन भाषा और साहित्य, कला और वास्तुकला तथा सामाजिक मानदंडों और धार्मिक प्रथाओं को मूर्त रूप प्रदान करने में भूमिका निभाई है। आंध्र प्रदेश के कई बौद्ध विहारों और स्तूपों के भव्य अवशेष हमें उस प्राचीन समय की झलक प्रदान करते हैं जब बौद्ध धर्म इस राज्य में फला–फूला था। राज्य के 144 बौद्ध स्थलों में से, समय के थपेड़े सह लेने वाले प्रमुख स्थल नागार्जुनकोंडा तथा अमरावती हैं। तीसरी शताब्दी में शिक्षा का महत्वपूर्ण केंद्र नागार्जुनकोंडा, जो 'श्रीपर्वत' के नाम से भी जाना जाता था इक्ष्वाकु राजवंश की राजधानी थी। अमरावती भारत में बौद्धों का सबसे पवित्र स्थान था तथा ऐसा माना जाता है कि बुद्ध को पहली बार मानव रूप में यहीं चित्रित किया गया था।

आंध्र प्रदेश की झांकी, अमरावती के महान स्तूप तथा बुद्ध की प्रतिमा के साथ–साथ आचार्य नागार्जुन को झांकी में अपने शिष्यों को 'भिक्षुओं' के रूप में शिक्षा देते हुए प्रदर्शित कर बौद्ध विरासत का गुणगान करती है।

Buddhist Heritage of Andhra Pradesh

For more than a millennium, Buddha's teachings had profound influence on the lives of the people of the ancient Andhra Pradesh. The language and literature, art and architecture and social norms and religious practices of that time were shaped by the enlightening stimulus of this great Teacher. The magnificent remains of many Buddhist Viharas and Stupas in Andhra Pradesh give us a glimpse of the ancient times when Buddhism flourished in the State. Out of the 144 Buddhist sites in the State which have withstood the ravages of time, the most prominent sites are **Nagarjunakonda** and **Amaravati**. **Nagarjunakonda,** known as 'Sriparvata' in ancient times, was the capital city of the Ikshavaku Dynasty and a great centre of learning during 3rd Century A.D. **Amaravati** was the most sacred pilgrim centre of the Buddhists in India and it is believed that the first depiction of Buddha in human form was done here.

The Tableau of Andhra Pradesh celebrates the Buddhist heritage by depicting the Great Stupa of Amaravati and the statue of Buddha along with Acharya Nagarjuna teaching his disciples (the 'Bikhus').

महिलाओं, वृद्धों एवं विक्लांगों का सशक्तिकरण

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की झांकी की विषय–वस्तु भावपूर्ण ढंग से यह बताती है कि विक्लांगता अयोग्यता नहीं है तथा विक्लांग व्यक्ति विशेष रूप से सक्षम हैं। दृष्टिहीन व्यक्तियों के पास श्रेष्ठ कंप्यूटर और टंकण कौशल है। शारीरिक रूप से विक्लांग व्यक्ति सफलतापूर्वक पीसीओ/एसटीडी बूथ चला रहा है तथा समाचार संकेत भाषा में पढ़े जा रहे हैं। झांकी यह चित्रित करती है कि किस प्रकार विक्लांग व्यक्तियों के लिए सहायक उपकरणों का प्रबंध किया जा रहा है तथा कैसे एक पटल की मौजूदगी उससे बने बाधामुक्त परिवेश में एक व्हील चेयर पर बैठे व्यक्ति को चलने में सहायक बनाती है। व्हील चेयर पर बैठे बच्चों द्वारा विभिन्न प्रकार के नृत्य जिस फुर्ती से किए जा रहे हैं उससे यह परिलक्षित होता है कि वे विशिष्ट योग्यता रखते हैं।

झांकी का अग्र भाग प्रौढ़ व्यक्तियों द्वारा सुखद और संतुष्ट जीवन व्यतीत किया जाना दर्शाता है तथा यह भी संकेत देता है कि वृद्ध व्यक्ति जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय अपने परिवार के सदस्यों और समाज को दिया है, के पास जीवन के अंतिम वर्षों में सुरक्षित परिवेश होना चाहिए। यह झांकी अवरोधमुक्त समाज और गरिमापूर्ण जीवन की दिशा में एक कृतसंकल्प अभियान का सच्चा चित्रण है।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय

Empowerment of Women, Old and Disabled

The theme of the tableau of Ministry of Social Justice and Empowerment eloquently conveys that disability is not an inability and the disabled are only differently able. The visually impaired have excellent computer and typing skills. A physically disabled man is successfully running a PCO/STD Booth and the news is being read in sign language. The tableau depicts how the provisions of assistive devices are being made to the disabled and how the existence of a ramp for a barrier free environment helps a man in a wheel-chair to commute. The ability to perform various dance sequences by children in wheel-chairs reflects that they are person with special abilities.

The front portion of the tableau shows the happy and satisfied life being led by elderly persons and conveys the message that the aged, who have given their best years to their families and to the society, must have a secured environment in their sunset years. The tableau is a true depiction of a determined march towards a barrier-free society and a life of dignity.

Ministry of Social Justice and Empowerment

प्रहारक क्षमता युक्त शक्ति

भारतीय आयुध निर्माणियां, भारतीय सशस्त्र बलों को अत्याधुनिक रक्षा उत्पाद मुहैया कराने संबंधी अपनी प्रतिबद्धता पूरा करने में सफल रही है। शहरी युद्ध–पद्धति की नई चुनौतियों का सामना करने के लिए झांकी में दिखाया गया दूर नियंत्रित शस्त्र स्टेशन युक्त "टॉरजन" सुरंग सुरक्षित वाहन जो टीएनटी तथा भारी आईईडी विस्फोटों का प्रतिरोध करने तथा भीतर के सुरक्षित परिवेश से दूर से फायर करने में सक्षम है। कवचित वाहनों में प्रौद्योगिकीय विकास द्वारा खड़ी की गई चुनौतियों के मद्देनजर प्रक्षेपास्त्र चलाने वाली क्षमता से युक्त नई पीढ़ी की "**भीष्म**" टी–90 एस टैंक का आयुध निर्माणियों द्वारा उत्पादन किया जा रहा है।

भारतीय आयुध निर्माणियों के पास रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में 200 वर्षों से अधिक का अनोखा अनुभव है तथा इन निर्माणियों ने 'रक्षा का चौथा स्तंभ' जैसा उपयुक्त उपनाम हासिल किया है। आयुध निर्माणी बोर्ड की झांकी प्रतीकात्मक रूप मे संगठन के विकास और राष्ट्र के प्रति इसकी सेवाओं को दर्शाती है।

आयुध निर्माणी बोर्ड

The Power that Packs the Punch

The Indian Ordnance Factories have been successful in fulfilling their commitment of providing the Indian Armed Forces with the state-of-the-art defence products. To tackle the new challenges of urban warfare, the "***Torjan***" Mine Protected Vehicle (MPV) fitted with a Remote Controlled Weapon Station (RCWS) depicted in the tableau is capable of withstanding heavy TNT and IED blasts as well as firing a weapon remotely from the protected environment. Keeping in view the new challenges posed by technological developments in armoured vehicles, the new generation "**Bhishma**" T-90S Tank with ability to fire missiles, is being produced by the Indian Ordnance Factories. The tableau is therefore aptly called "The Power that Packs the Punch".

The Indian Ordnance Factories possess the unique distinction of more than 200 years' experience in defence production and it has deservedly earned the sobriquet '**Fourth Arm of Defence**'. The tableau of Ordnance Factory Board shows, in symbolic form, the growth of the Organisation and it's services to the nation.

Ordnance Factory Board

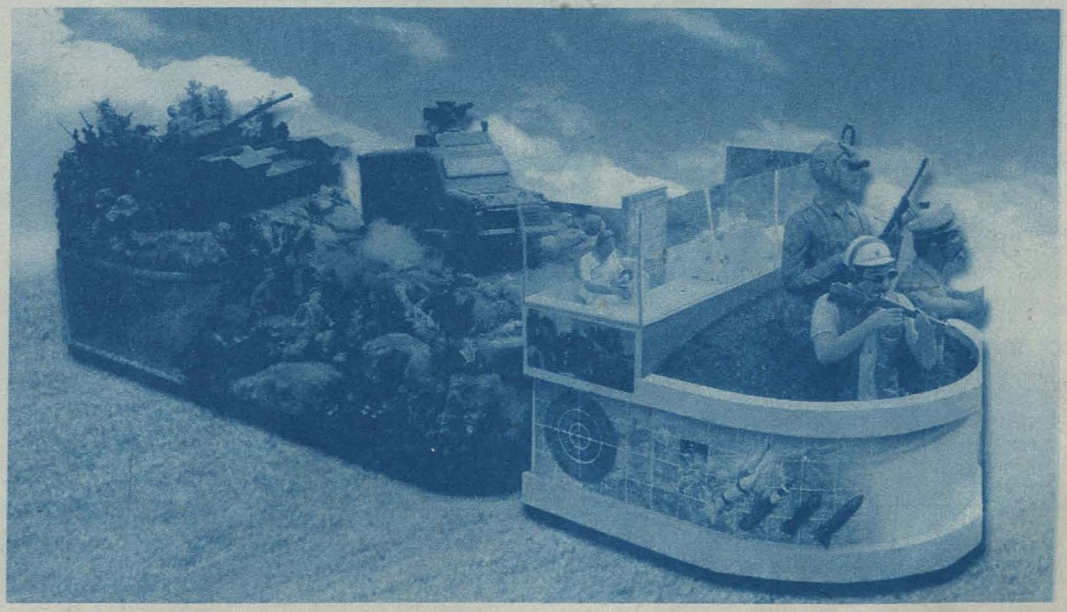

27

आशा (प्राधिकृत सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता)

बेहतरीन प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं के साथ लोगों के स्वास्थ्य, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र की गरीब महिलाओं तथा बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए सरकार ने 12 अप्रैल, 2005 को राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एन आर एच एम) शुरू किया है। एन आर एच एम के अंतर्गत सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता महत्वपूर्ण संघटकों में से एक है। चूंकि 75 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण इलाकों में रहती है। 'हाई फोकस' राज्यों के प्रत्येक गांव में एक प्रशिक्षित महिला, प्राधिकृत सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता रखने का प्रस्ताव है। एक हजार की जनसंख्या पर एक **आशा** सामान्य मानक होगा। **आशा**, जोकि गांव से संबंध रखती है, स्वास्थ्य मिशन तथा समुदाय के बीच एक सम्पर्क के रूप में कार्य करेगी। आशाएं, सम्पूर्ण टीकाकरण, सुरक्षित प्रसव, नवजात शिशु की देखरेख, पोषक आहार, स्वच्छता तथा जलजन्य एवं अन्य संक्रामक रोगों के निदान के लिए सामुदायिक कार्य को सुदृढ़ करने में सहायता करेंगी। किसी स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकता के मामले में वह अपने ग्रामीण साथियों के लिए प्रथम सहायक होगी।

स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय की झांकी में, गांव में **आशा** की महत्वपूर्ण भूमिका पर विशेष ध्यान दिया गया है। झांकी का उद्देश्य जागरूकता पैदा करना तथा **आशा** के बारे में जानकारी का प्रचार करना है। **'स्वस्थ ग्राम, स्वस्थ भारत'** का नारा तथा आशा के आदर्श कार्य विषयवस्तु को सारगर्भित रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

ASHA (Accredited Social Health Activist)

In order to improve the health of the people especially the poor women and the children in rural areas with quality primary health care services, the Government has launched the National Rural Health Mission (NRHM) on 12th April 2005. One of the key components under NRHM is a community health worker. As 75% of our population live in rural areas, it is proposed to have one trained woman - Accredited Social Health Activist (ASHA) - in each village across the high focus states. The general norm will be that for a population of 1000, there will be one ASHA. ASHA, who belongs to the village, would act as a link between the health mission and the community. ASHAs would reinforce community action for universal immunization, safe delivery, newborn care, nutrition, sanitation and prevention of water borne and other communicable diseases. She will be the first port of call for her fellow villagers in case of any health related need.

The Tableau aims at creating awareness and disseminating information about ASHA. The slogan **'Swasthya Gram, Swasthya Bharat'** and the presence of role model of ASHA highlights the theme.

Ministry of Health and Family Welfare

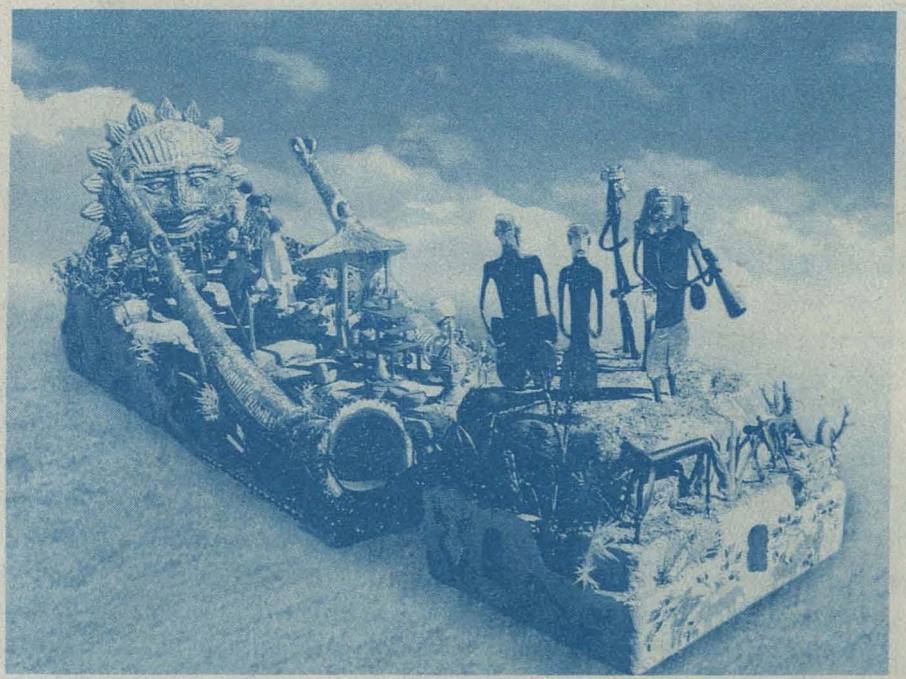

जनजातीय धरोहर

हमारे देश के जनजातीय समुदायों की जीवन शैली ने हमें सदैव मंत्र–मुग्ध किया है। जनजातीय मामलों संबंधी मंत्रालय ने अपनी झांकी के माध्यम से जनजातीय भारत की ओजपूर्ण तथा रंगीन धरोहर को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है।

झांकी में देश के विभिन्न भागों के जनजातीय लोगों की समृद्ध तथा रंगारंग कला को दर्शाया गया है। जनजातीय लघुमूर्तियां छत्तीसगढ़ के स्थानीय लौह शिल्प की कलात्मक अभिव्यक्ति है। ट्रैक्टर के पार्श्व भाग में पशु–पक्षियों, देवी–देवताओं, दानवों आदि की परम्परागत रूपों में रंगीन गोंड चित्रकारियों को चित्रित किया गया है। झांकी के पृष्ठ भाग में गुजरात की जनजातियों की नयनाभिराम 'रथवा चित्रकारी' को दर्शाया गया है। जनजाति द्वारा शुरू किए गए मूल्यवर्धन कार्यकलाप भी दर्शाए गए हैं, जहां एक बोडो महिला करघे पर कपड़ा बुन रही है। झांकी के पृष्ठ भाग में दिखाया गया चमकता सूर्य तथा एक विशाल वाद्य–यंत्र जनजातीय लोगों के जीवन में खुशहाली तथा समृद्धि का द्योतक है। जनजातीय मामलों संबंधी मंत्रालय विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों के माध्यम से जनजातीय लोगों के जीवन में खुशहाली तथा समृद्धि लाने का प्रयास कर रहा है।

जनजातीय कार्य मंत्रालय

Tribal Heritage

The life style of the tribal communities of our country have always fascinated us. Ministry of Tribal Affairs through its tableau demonstrates the vibrant and the colourful heritage of tribal India.

The tableau displays the rich and the colourful art form of the tribals from the different parts of our country. The tribal figurines are an artistic expression in typical form of iron craft of Chattisgarh. The side panels of the tractor portray the colourful Gond paintings of animals, birds, deities, demons etc. in traditional form. The trailer portion showcases the eye-catching art form "RATHWA PAINTINGS" from the tribals of Gujarat. The value addition activities taken up by the tribals are also shown where a Bodo woman is weaving fabric on a loom. The Sun in all its splendour and glory and a huge musical instrument shown in the rear of tableau symbolizes happiness and prosperity in the lives of tribal people. The Ministry of Tribal Affairs is striving to bring happiness and prosperity in the lives of tribal through various schemes and programmes.

Ministry of Tribal Affairs

ब्रॉडबैंड

आज दूर संचार के क्षेत्र में बड़ी क्रान्ति आ रही है। ब्रॉडबैंड प्रौद्योगिकी से तीव्र–गति की दूरसंचार संपर्क सुविधा उपलब्ध हो रही है जिससे वाणी संचार, डाटा और वीडियो सेवाओं जैसी एकीकृत सेवाएं स्थानीय टेलीफोन लाइन पर प्रदान की जा सकती हैं। ब्रॉडबैंड अत्यंत तीव्र गति के साथ एक ऐसा सशक्त माध्यम बन रहा है जिससे भारत एक अग्रणी अंतरराष्ट्रीय सहभागी के रूप में उभर रहा है।

टेली शिक्षा के माध्यम से पारस्परिक दूरस्थ अध्ययन भारत के दूर–दराज के क्षेत्रों तक पहुंच रहा है। विडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए दूरियाँ मिट रही हैं जिससे सूचना का आदान–प्रदान आसान हो गया है। कृषि विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में प्राप्त नवीनतम उपलब्धियां अब सीधे प्रदर्शन से किसानों तक पहुंच सकती हैं। इसके अलावा टेली मेडिसिन के जरिए प्राप्त चिकित्सा विशेषज्ञता बहुत से लोगों की जान बचा सकती है तथा स्वास्थ्य के प्रति लोग जागरूक हो रहे हैं। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय अपनी इस झांकी के माध्यम से यह दर्शाता है कि किस प्रकार ब्रॉडबैंड दूरसंचार के क्षेत्र में भावी क्रान्ति लाकर आम आदमी के जीवन स्तर को उन्नत बना रहा है।

संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

Broadband

Tele-communication is ushering in a major revolution today. Broadband technology provides high speed tele-communication connectivity that can deliver integrated services such as voice communication, data and video services on a local telephone line. Broadband is fast becoming a strong medium empowering India to emerge as leading global partner.

Interactive distance learning through tele-education is reaching to the remote corners of India. Video conferencing is removing the distance barriers enabling the easy exchange of information. The latest advancements in agriculture science and research can now reach the farmers with live demonstrations. Also, the specialized medical expertise can save life of many people through tele-medicine and spread awareness towards health to the masses. Ministry of Communication and Information Technology through its tableau depicts how broadband is enhancing the quality of life of common man portraying the revolution in the telecom sector.

Ministry of Communication and Information Technology

30

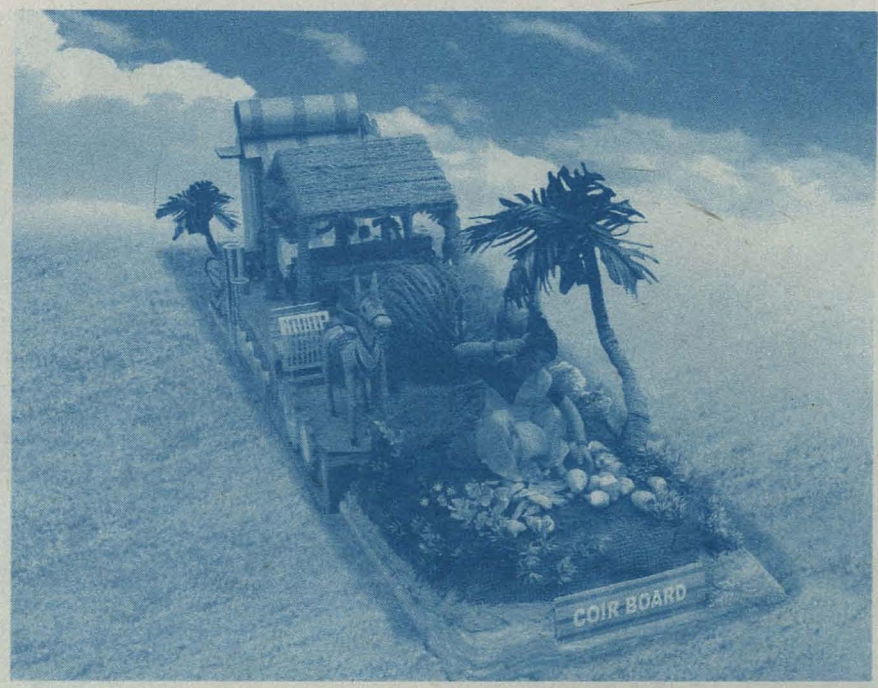

नारियल जूट उद्योग

भारतवासियों में "कल्पवृक्ष" के रूप में प्रसिद्ध नारियल वृक्ष, मानव समुदाय को भोजन, पानी, आश्रय, सजावट, मनोरंजन के साथ–साथ और भी बहुत कुछ उपलब्ध कराता है। तटीय क्षेत्रों में लाखों लोगों के लिए मुख्य आजीविका का स्रोत, नारियल के छिलके से निकाली गई जटा के बहुउपयोगी सुनहरी रेशे से निर्मित पायदान, रग्ज, कालीन, रबड़युक्त सुनहरी रेशे आम आदमी के जीवन के हर पहलू पर छाप छोड़ते हैं। सदियों पहले एक साधारण रस्सी अथवा दरवाजे के पायदान से छोटी शुरुआत करके अब नारियल जटा ने व्यावसायिक तथा आधुनिक उद्योग बनकर एक लंबी यात्रा तय की है।

नारियल के छिलके को नारियल जटा के रेशे तथा अनेक उत्पादों के रूप में बदलना पर्यावरण के अनुरूप एक कवायद है। हरित क्रान्ति ने मानवजातीय, पारिस्थितिकीय रूप से अनुकूल स्वास्थ्यकर, बहु उपयोगी नारियल जटा कों अंतरराष्ट्रीय रूप से प्रतिष्ठित समाज की जरूरत बना दिया है। जैसा कि, मनुष्य सिंथेटिक सामान को अलविदा कह रहा है और प्राकृतिक उत्पादों को अपना रहा है, ऐसे में रोजमर्रा के बहुत से कार्यों में नारियल जटा, हरित विकल्प के रूप में उपलब्ध है। कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय के नारियल जूट बोर्ड की झांकी में "अनुपयोगी वस्तुओं से धन अर्जित करना" की अवधारणा को प्रस्तुत किया गया है।

कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय
(नारियल जूट बोर्ड)

Coir Industries

Known as the "Kalpa Vriksha" among the Indians, the coconut tree provides the community with food, drink, shelter, furnishing, entertainment and a lot more. Source of livelihood for the lakhs of people in coastal areas, the versatile golden fibre of coir extracted from the husk of coconut touches many facets of common man's life and activities in the form of door mats, rugs, carpets, rubberized coir mattresses, coir textiles etc. From the humble beginning of a simple rope or a door mat centuries back, coir has now travelled a long way in becoming professional and modern industry.

The transformation of coconut husk into coir fibre and a variety of other products is an environment friendly exercise. The green movement has launched the ethnic, eco-friendly, hygienic, versatile coir into most useful commodity world-wide. As mankind is increasingly bidding goodbye to the world of synthetics and embracing natural products, coir is emerging as a green option to a variety of applications in day-to-day life. The tableau of the Coir Board, Ministry of Agro and Rural Industries epitomizes the concept of "wealth from waste".

Ministry of Agro and Rural Industries
(Coir Board)

भारत की उड़ान

हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड एक अग्रणी एयरोस्पेस कम्पनी है, जिसके सोलह उत्पादन प्रभाग और नौ अनुसंधान एवं विकास केंद्र सम्पूर्ण देश में फैले हुए हैं। विगत छह दशकों में, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड ने उन्नत लड़ाकू विमानों, प्रशिक्षण विमानों, हेलिकॉप्टरों, परिवहन विमानों तथा सम्बद्ध एयरो–इंजनों, सहायक पुर्जों, वैमानिक और वायुवाहित प्रणालियों के अभिकल्पन, विकास, विनिर्माण तथा अनुरक्षण के क्षेत्रों में विभिन्न क्रिया–कलाप शुरू किए हैं। इससे एयरोस्पेस वाहनों की संरचनाओं, औद्योगिक एवं समुद्री गैस टरबाइनों और सॉफ्टवेयर का विनिर्माण भी शुरू किया गया है। विगत वर्षों में, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड ने 3500 विमानों (जिनमें स्वदेशी डिजाइन की 11 किस्में शामिल हैं) का उत्पादन किया है और लगभग 8000 विमानों तथा 2700 इंजनों की मरम्मत की है।

हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड ने पिछले वित्त वर्ष के दौरान 1 बिलियन अमरीकी डालर से भी अधिक का कारोबार किया। गणतंत्र दिवस परेड में, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड की झांकी में स्वदेश में ही डिजाइन तथा विकसित उन्नत हल्का हेलिकॉप्टर **'ध्रुव'**, मध्यवर्ती जेट प्रशिक्षण विमान एचजेटी–36, **किरण** जेट प्रशिक्षक विमान और हल्का लड़ाकू विमान **तेजस** दर्शाए गए हैं। इनके अतिरिक्त, लाइसेंस के तहत निर्माण किए जा रहे सुखोई–30 एमकेआई को भी प्रदर्शित किया गया है।

हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड

Wings of India

Hindustan Aeronautics Limited (HAL) is a premier aerospace company with sixteen production divisions and nine Research and Development Centres spread across the country. Over the past six decades, HAL has spread its wings to cover various activities in the areas of Design, Development, Manufacture and Maintenance of advanced fighters, trainers, helicopters, transport aircraft and associated aero-engines, accessories, avionics and airborne systems. It has also diversified into manufacture of structures for aerospace vehicles, industrial and marine gas turbines as well as Software. Over the years, HAL has produced over 3,500 aircraft (including 11 types from indigenous design) and overhauled about 8,000 aircraft and 27,000 engines.

HAL has achieved a turnover of over 1 Billion U.S. Dollars during the last financial year. In the Republic Day Parade, HAL tableau displays the indigenously designed and developed 'Dhruv'- Advanced Light Helicopter, HJT-36 - Intermediate Jet Trainer, Kiran Jet Trainer and TEJAS - Light Combat Aircraft. Besides these, SU-30 MKI being manufactured under license is also displayed in the tableau.

Hindustan Aeronautics Limited

32

समुद्री जीवन

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग की यह झांकी 'समुद्री जीवन' को दर्शाती है। इसमें समुद्रों और महासागरों में मौजूद जलीय जीवन के विभिन्न रूप प्रदर्शित किए गए हैं और इसके अग्रभाग में वास्तविक ऑक्टोपस से भी बड़े आकार का ऑक्टोपस दर्शाया गया है। समुद्री जीवन का सूक्ष्म सौंदर्य, जिसमें रंग–बिरंगी प्रवाल–भित्तियां, मछलियां, नॉटिलस, अन्य समुद्री जीव, स्पांज तथा समूहों में विचरण करती तरह–तरह की रंग–बिरंगी मछलियां शामिल हैं, को झांकी के पश्च भाग में प्रदर्शित किया गया है। सीपी के अंदर समुद्र का सर्वाधिक आकर्षक एवं कीमती खजाना मोती तथा मूंगा झांकी के पिछले भाग में दर्शाए गए हैं। इस झांकी के पार्श्व–फलकों पर रंग–बिरंगी मछलियां दर्शाई गई हैं।

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग

Sea Life

The floral tableau of the Central Public Works Department (C.P.W.D.) presents **'Sea Life'**. Showcasing the wide variety of aquatic life that exists in the seas and the Oceans, tractor portion of the tableau depicts a larger than life size Octopus. The exquisite beauty of the sea life that includes colourful corals, sponges, fish, and variety of colourful fish moving in groups is displayed on the trailer. The most demanding and valuable treasure trove of the sea - the Pearl and Coral - is shown on the rear portion of the tableau. Colourful fish are shown on the side panels of the tableau.

Central Public Works Department

बच्चों की प्रस्तुति

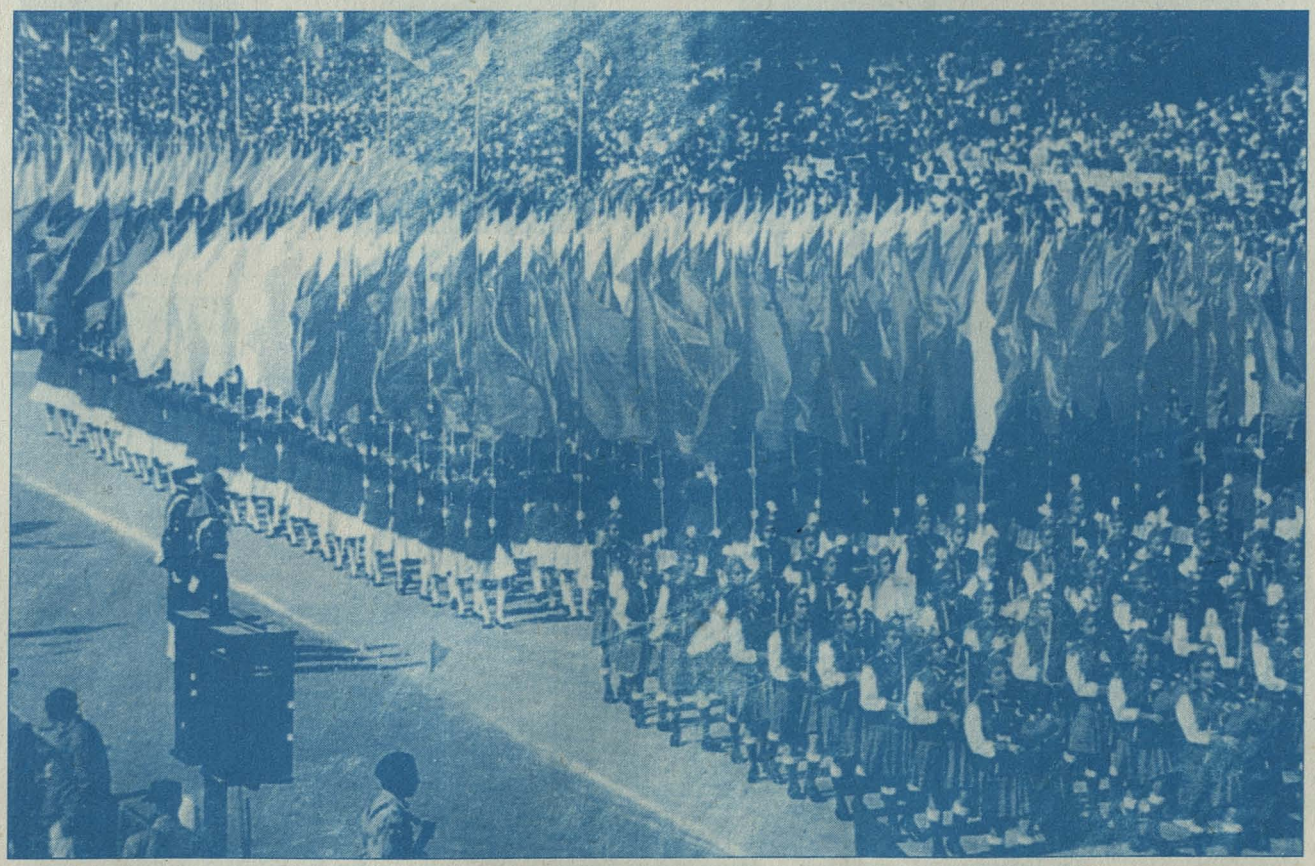

CHILDREN'S PAGEANT

वीरता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता-2005

Winners of National Award for Bravery – 2005

Master Ratul Chandra Rabha

Master Rituparna Boro

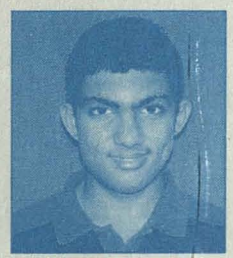

Master Sanmesh Mahesh Kalyanpur

Km. Seidalyne Mawtyllu

Km. Dugi Alias Minati Gagaral

Km. Chanigalla Susheela

Master Mahesh Kumar

Master Naragani Venkateswara Rao

Master Sarath Babu

Master Laxman

Master Shibu T. (Posthumous)

Master Nelson Karam

Km. Leitanthem Pusparani Devi

Master Mukesh Kumar Tanwar

Km. Divya T. V.

Master Putijungshi

Master Santosh Ramesh Dahe

वीरता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता-2005

नाम	राज्य
मास्टर रातुल चन्द्र राभा*	असम
मास्टर ऋतुपर्ना बोरो*	असम
मास्टर सन्मेश महेश कल्याणपुर**	महाराष्ट्र
कुमारी सेदलीन मॉटील्लुप***	मेघालय
कुमारी डुगी उर्फ मिनती गगराल****	उड़ीसा
कुमारी चनिगल्ला सुशीला****	आंध्र प्रदेश
मास्टर महेश कुमार****	उत्तरांचल
मास्टर नरागिन वेंकटेश्वर राव	आंध्र प्रदेश
मास्टर सरथ बाबू	केरल
मास्टर लक्ष्मण	छत्तीसगढ़
मास्टर शिबु टी. (मरणोपरांत)	केरल
मास्टर नेलसन करम	मणिपुर
कुमारी लेतनथेम पुष्पारानी देवी	मणिपुर
मास्टर मुकेश कुमार तँवर	मध्य प्रदेश
कुमारी दिव्या टी.वी.	केरल
मास्टर पुतिजुंग्शी	नागालैंड
मास्टर संतोष रमेश दहे	महाराष्ट्र

Winners of National Award for Bravery – 2005

Name	State
Master Ratul Chandra Rabha*	Assam
Master Rituparna Boro*	Assam
Master Sanmesh Mahesh Kalyanpur**	Maharashtra
Km. Seidalyne Mawtyllup***	Meghalaya
Km. Dugi Alias Minati Gagaral****	Orissa
Km. Chanigalla Susheela****	Andhra Pradesh
Master Mahesh Kumar****	Uttranchal
Master Naragani Venkateswara Rao	Andhra Pradesh
Master Sarath Babu	Kerala
Master Laxman	Chhattisgarh
Master Shibu T. (Posthumous)	Kerala
Master Nelson Karam	Manipur
Km. Leitanthem Pusparani Devi	Manipur
Master Mukesh Kumar Tanwar	Madhya Pradesh
Km. Divya T. V.	Kerala
Master Putijungshi	Nagaland
Master Santosh Ramesh Dahe	Maharashtra

* भरत पुरस्कार

** संजय चोपड़ा पुरस्कार

*** गीता चोपड़ा पुरस्कार

**** बापू गयाधानी पुरस्कार

* Bharat Award

** Sanjay Chopra Award

*** Geeta Chopra Award

**** Bapu Gayadhani Award

स्कूली बालक और बालिकाओं का बैंड

बच्चों की यह सांस्कृतिक प्रस्तुति "कारगिल के वीर" धुन बजाते हुए बालक और बालिकाओं के बैंड के नेतृत्व में आगे बढ़ रही हैं। इस बैंड में दिल्ली के निम्नलिखित स्कूलों के बच्चे भाग ले रहे हैं :

श्री गुरु तेग़ बहादुर खालसा गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, शीशगंज, चांदनी चौक; गुरु नानक गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सब्जी मंडी, घंटाघर; कमल मॉडल स्कूल, मोहन गार्डन; दशमेश पब्लिक स्कूल, विवेक विहार; एस एम जैन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कमला नगर; जैन समनोपासक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सदर बाजार; महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल, अशोक विहार; विवेकानन्द पब्लिक स्कूल, डी–ब्लॉक, आनन्द विहार; रियॉन इंटरनेशनल स्कूल, सैक्टर–24, रोहिणी; महाराजा अग्रसेन स्कूल, प्रीतमपुरा और सी आर पी एफ सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सैक्टर–14, रोहिणी।

Band by School Girls and Boys

The cultural pageant of children is heralded by a Band Contingent of girls and boys playing the tune "Kargil Ke Veer". Children participating in the Band are drawn from the following Schools of Delhi:

Shri Guru Teg Bahadur Khalsa Girls Senior Secondary School, Sis Ganj, Chandni Chowk; Guru Nanak Girls Senior Secondary School, Subzi Mandi, Ghanta Ghar; Kamal Model School, Mohan Garden; Dashmesh Public School, Vivek Vihar; S. M. Jain Senior Secondary School, Kamala Nagar; Jain Samnopasak Senior Secondary School, Sadar Bazar; Maharaja Agrasen Public School, Ashok Vihar; Vivekanand Public School, D-Block, Anand Vihar; Ryan International School, Sector-24, Rohini; Maharaja Agrasen School, Pitam Pura; and CRPF Senior Secondary School, Sector-14, Rohini.

ध्वजवाहक – बालक और बालिकाएं

मार्च पास्ट में भाग ले रहे बच्चे दिल्ली के निम्नलिखित स्कूलों से हैं :

गवर्न्मेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, के–ब्लॉक, जहांगीरपुरी; गवर्न्मेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बख्तावरपुर; सर्वोदय कन्या विद्यालय, प्रशान्त विहार; सलवान गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, राजेन्द्र नगर; बी आर मेहता सीनियर सेकेंडरी स्कूल, लाजपत नगर; माउंट आबु पब्लिक स्कूल, सैक्टर–5, रोहिणी; मदर डिवाइन पब्लिक स्कूल, सैक्टर–3, राहिणी; हैप्पी होम सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सैक्टर–11, रोहिणी; सलवान वॉयज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल, राजेन्द्र नगर; एयर फोर्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, रेसकोर्स; विवेकानन्द सीनियर सेकेंडरी स्कूल, आनन्द विहार; माउंट आबु स्कूल, सैक्टर–18, रोहिणी और एम एन कॉन्वेंट पब्लिक स्कूल, स्वरूपनगर।

Flag Bearers – Girls and Boys

The children participating in the March Past are drawn from the following Schools of Delhi:

Government Girls Senior Secondary School, K-Block, Jahangirpuri; Government Girls Senior Secondary School, Bakhtawarpur; Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Prashant Vihar; Salwan Girls Senior Secondary School, Rajinder Nagar; B. R. Mehta Senior Secondary School, Lajpat Nagar; Mount Abu Public School, Sector – 5, Rohini; Mother Divine Public School, Sector-3, Rohini; Happy Home Senior Secondary School, Sector-11, Rohini; Salwan Boys Senior Secondary School, Rajinder Nagar; Air Force Senior Secondary School, Race Course; Vivekanand Senior Secondary School, Anand Vihar; Mount Abu School Sector-18, Rohini; and M. N. Convent Public School, Swaroop Nagar.

गोगा पीर

राजस्थान का मशहूर लोक नृत्य "गोगा पीर" साम्प्रदायिक सद्भाव और हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के सार के प्रतीक स्वरूप यहां के लोगों के बहादुरी भरे कारनामों पर आधारित है। राजस्थान के गोगा मेडी गांव में गोगाजी की समाधि पर वार्षिक मेला लगता है। मेले के दौरान राज्य के सभी भागों से लोग इकट्ठा होते हैं चाहे वे किसी भी जाति, पंथ या धर्म के हों। गोगाजी की समाधि पर श्रद्धा अर्पित करने के बाद, लोग रंग–बिरंगे और आकर्षक परिधान पहने हुए और अपने हाथों में पताका, साइन बोर्ड और मोर के रंग–बिरंगे पंख पकड़े हुए अपने विश्वास, हर्षोल्लास, धार्मिक सहिष्णुता और पूर्ण एकता को अभिव्यक्त करने के लिए पूरे उत्साह से नाचते–गाते हैं। वंदना इंटरनेशनल स्कूल, द्वारका और कमल मॉडल स्कूल, मोहन गार्डन, दिल्ली के छात्र यह रंगारंग प्रस्तुति पेश कर रहे हैं।

Goga Peer

The famous folk dance of Rajasthan, "Goga Peer" is based on the communal harmony and the valiant deeds of the people symbolising the essence of our civilization and culture. At the Samadhi of Gogaji in Goga Medi village (Rajasthan), an annual fair is held. People from all parts of the state irrespective of their caste, creed and religion assemble during the fair. After paying their obeisance at the Samadhi of Goga Peer, people in colourful and attractive dresses, holding flags, signs boards and multi coloured feathers of peacocks sing and dance enthusiastically to express their faith, joy, religious tolerance and solidarity. The students of Vandana International School, Dwarka and Kamal Model School, Mohan Garden, Delhi are presenting the colourful performance.

तम्लियाक्पे लिम (तितली नृत्य)

तम्लियाक्पे लिम (तितली नृत्य) नागालैंड में पेरेन जिले के जेलियांग जनजाति द्वारा किया जाता है। यह नृत्य युवाओं द्वारा त्यौहारों और महत्वपूर्ण सामाजिक सभाओं के दौरान ग्रामवासियों को अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि का आशीर्वाद देने के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर के वरदान का आह्वान करने के लिए किया जाता है। यह नृत्य, सफल योद्धाओं द्वारा घर वापस आने और ट्राफियां लाने की खुशी में भी किया जाता है। तम्लियाक्पे लिम (तितली नृत्य), उत्तर पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर के छात्रों द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।

Tamliakpe Lim (Butterfly Dance)

The Tamliakpe Lim (Butterfly Dance) is performed by the Zeliang tribe of Peren District in Nagaland. This dance is performed by the youths in festive gaiety during festivals and important social gatherings to invoke blessings of the Almighty God to bless the village with good health and prosperity. The dance is also performed to celebrate the trophies being brought home by the successful warriors. Tamliakpe Lim (Butterfly Dance) is being performed by the students of the North East Zone Cultural Centre, Dimapur.

गरदी नृत्य

दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, तंजावूर के छात्र 'गरदी नृत्य' प्रस्तुत कर रहे हैं। ऐसी मान्यता है कि इस नृत्य की उत्पत्ति रामायणकाल में हुई जब वानरों (बंदरों) ने रावण पर भगवान राम की विजय की खुशी में 'गरदी' नृत्य किया था। उत्सव के अवसरों पर किया गया 'गरदी' नृत्य, में पांच से आठ घंटे तक चल सकता है। इस नृत्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि नर्तक अपने दोनों पैरों में लोहे के छल्ले, जिसे 'अंजली' कहा जाता है, दस–दस पहनते हैं। जैसे ही नर्तक नृत्य की जटिल भंगिमाएं करता है, तो इन छल्लों से सुरीली तथा मधुर ध्वनि निकलती है। नर्तक वानरों का भेष धारण कर लेते हैं और वे अपने–अपने हाथों में छड़ियां लिए हुए 'रामा ढोलू' नामक ढोलों की थाप पर नृत्य करते हैं।

Garadi Dance

The students of South Zone Cultural Centre, Thanjavur are presenting the 'Garadi' dance. The dance traces its origins to the ancient days of the Ramayana, when the Vanar (monkeys) performed 'Garadi' dance to celebrate the victory of Lord Rama over Ravana. Performed during the festive occasions, the 'Garadi' dance can continue for five to eight hours. A distinctive feature of this dance is the iron rings, called 'Anjali', which the dancers wear on their legs, ten on each leg. As the dancer executes the intricate movements of the dance, the rings produce a sweet and melodious sound. The dancers disguised as 'Vanaras', carry sticks on their hands as they dance to the beat of the drums called 'Rama Dolu'.

घिंडड घूमर

सेंट गिरि सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सैक्टर–3, रोहिणी, नई दिल्ली के छात्र राजस्थानी नृत्य 'घिंडड घूमर' प्रस्तुत कर रहे हैं। फाल्गुन माह में धुलेन्डी के समय पुरुष व महिलाओं द्वारा यह नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। ऐसे बहुत ही कम नृत्य हैं जो पुरुषों और महिलाओं द्वारा एक साथ किए जाते हैं।

फाल्गुन माह में बसंत के फूलों की सुगंध और प्रकृति द्वारा बिखेरे गए असंख्य रंग आत्मा और शरीर को नृत्यमय कर देते हैं। प्रियतम से मिलने के लिए लालायित प्रेमिका के हृदय की प्रतिध्वनि से चूड़ियां और कंगन खनकने लगे हैं। घिंडड घूमर फागुन या होली के हर्षोल्लास और खुशियों को प्रस्तुत करता है जब आंगन में बिखरे हुए रंग हृदय की धड़कनों के साथ शरीर और आत्मा नाचने लगते हैं।

Ghindad Ghoomer

The students of St. Giri Senior Secondary School, Sector-3, Rohini, New Delhi are presenting Rajasthani dance, 'Ghindad Ghoomer'. It is performed by men and women at the time of Dhulendi in the month of 'Phalguna'. There are very few dances which are performed by the male and female together.

The month of 'Phalguna' coinciding with the floral fragrance of spring and myriads of colours splashed by the nature, makes the soul and the body dance. Bangles and bracelets dangle with the echo of hearts craving for meeting with her beloved. The performance of Ghinadad Ghoomer presents the joy and excitement of phagun or holi by the courtyard sprinkled with colours, making body and soul dancing with delight.

मेवासी चंदला सगाई नृत्य

गुजरात, दक्षिण–पूर्व अंचल पहाड़ियों, नदियों और हरे–भरे जंगलों से घिरा है। तीन नदियों अर्थात् 'नर्मदा', 'ओर्सग' और 'हेरन' के डेल्टा को 'मेवास' कहते हैं। भौगोलिक दृष्टि से मेवास क्षेत्र, तीन तालुकाओं–तिलकवाड़ा, नस्वाडी और संखेड़ा तक फैला हुआ है जिसमें तीन जनजातियां अर्थात् 'भील', 'वास्वा' और 'तदवी' रहती हैं। 'मेवासी वनवासी', नाम से जानी जाने वाली तीनों जनजातियां परिश्रमी और आमोद–प्रमोद के प्रेमी हैं। सगाई अर्थात् 'चंदला सगाई' के अवसर पर दूल्हा और दुल्हन की ओर से युवा बालक और बालिकाएं पूरे हर्षोल्लास के साथ नृत्य करते हैं। 'ढोल' (बड़े आकार के ढोल), 'तिम्ली' (छोटे आकार के ढोल), 'थाली' (कांसे की थाली), 'नगाड़ी' (एकतरफा ढोल) लय के रूप में प्रयोग में लाए जाते हैं। 'सरनाई' (शहनाई) इस शानदार नृत्य को मधुर संगीत प्रदान करती है; रंग–बिरंगे परिधान, लचीली थिरकनें और नवीन भंगिमाएं मेवासी की सुंदरता और विजयोल्लास को बढ़ाती हैं। पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर के छात्र मेवासी चंदला सगाई नृत्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

Mewasi Chandla Sagai Nritya

The South-Eastern region of Gujarat is surrounded with hills, rivers and green forests. The delta of the three rivers namely 'Narmada', 'Orsang' and 'Heran' is called 'Mewas'. Geographically the Mewas area spread over the three talukas - Tillakwada, Naswadi and Sankheda is the abode of the three tribes called 'Bhil', 'Vasava' and 'Tadvi'. Popularly known as "Mewasi Vanvasis", the three tribes are laborious and fun loving. On the eve of the engagements i.e. "Chandla Sagai", the young boys and girls from the side of bride as well as bridegroom, dance with full joy and enthusiasm. 'Dhol' (Big size drums), 'Timli' (Small size drums), 'Thali' (Brown Plate), 'Nagari' (single face drum), are used for rhythms. 'Sarnai' (Shehnai) provides melody to this spectacular dance; colourful costumes, supple movements and innovative action enhance the beauty and triumph of Mewasi. The children of the West Zone Cultural Centre, Udaipur are presenting Mewasi Chandla Sagai Nritya.

सिरमौरी नट्टी

उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र पटियाला के बच्चे सिरमौर (हिमाचल प्रदेश) के अत्यधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध नृत्य 'सिरमौरी नट्टी' प्रस्तुत कर रहे हैं जो ग्राम देवता को प्रसन्न करने के लिए उत्सवों, मेलों, सामाजिक मिलन तथा अन्य धार्मिक त्योहारों के दौरान किया जाता है। नर्तक परम्परागत पोशाक में होते हैं। पुरुष – चूड़ीदार पायजामा, कमर में सफेद ऊनी 'चोला' और रंगीन 'पटका' बांधते हैं। स्त्रियां, छोटी कमीज़ 'कुर्ती' पहनती हैं। वे कमीज़ और 'सुथन' के ऊपर 'पट्टु' – एक रंगीन शाल, इस तरह से बांधते हैं जिससे धड़ और पांव ढक जाएं। पुरुष और महिलाएं दोनों टोपी या दुपट्टा पहनते हैं। पुरुषों की टोपी को 'टोप' और महिलाओं के दुपट्टे को 'थिपु' कहते हैं। महिला–पुरुष नर्तक एकल पंक्ति में खड़े होते हैं और हल्के और दबे पांव से चारों ओर घूमते हैं। वे अर्ध संकेन्द्रीय घेरा बनाते हैं, पूर्ण संकेन्द्रीय घेरा बनाते हैं और अंततः पाशन पद्धति से नाचते हैं। इस नृत्य में 'नरसिंघा', 'करनाल', 'शहनाई', 'ढोल' और 'नगाड़ा' आदि द्वारा संगीत दिया जाता है।

Sirmouri Natti

The children of North Zone Cultural Centre, Patiala are presenting 'Sirmouri Natti', the most popular and famous dance form of Sirmour (Himachal Pradesh) performed during the festivals, fairs, social gatherings and other religious festivities to please the Gram Devta. The dancers attire themselves in the traditional dress. Men wear a churidar pyjama, a white woollen 'Chola' and coloured 'Patka' around their waist. The women wear short shirt called 'Kurti'. On the top of the shirt and 'Suthan' they tie 'Pattu' - a colourful shawl in such a manner that it covers torso and legs. Both men and women wear cap or scarf. The cap of male is called 'Tope' and the female scarf 'Thipu'. The dancers, men and women enter in single file separately, moving around in supple and gliding steps; they form in half concentric circles, full concentric circles and inter-locking patterns. The musical accompaniment is given by the 'Narsingha', 'Karnal', 'Shehnai', 'Dhol' and 'Nagara' etc.

बैगा परधौनी नृत्य

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर के छात्र, 'बैगा' जनजाति के लोकप्रिय नृत्य 'बैगा परधौनी नृत्य' प्रस्तुत कर रहे हैं। यह जनजाति नृत्य, बारात के स्वागत के समय किया जाता है। घोड़ा, सांड और मोर के वेष में पुरुष यह नृत्य करते हैं। अकसर ये स्त्री के वेष में होते हैं। परधौनी नृत्य, दुल्हन के घर में प्रवेश के दौरान द्वार पर प्रतीक्षा कर रहे दूल्हे के सम्मान में किया जाता है।

Baiga Pardhauni Nritya

The students of the South Central Zone Cultural Centre, Nagpur are presenting 'Baiga' tribe's most popular dance, 'Baiga Pardhauni Nritya'. The tribal dance is performed to welcome the wedding procession. In different disguise of horse, bulls and peacocks, men perform this dance. Often they are disguised as women. Pardhauni dance is performed in the honour of bridegroom, waiting at the entrance of bride's house.

भांगड़ा

शांति ज्ञान निकेतन स्कूल, द्वारका के छात्र, पंजाब के सबसे लोकप्रिय लोकनृत्य 'भांगड़ा' प्रस्तुत कर रहे हैं। यह नृत्य इतना रंगारंग, संजीव और तेज होता है कि 'ढोल' की थाप और नृत्य की ताल किसी को भी लगातार चलने वाले 'भांगड़ा' में शामिल होने के लिए अवश्य ही प्रेरित करेगा।

Bhangra

The students of Shanti Gyan Niketan School, Dwarka are presenting the most popular Punjabi Folk Dance 'BHANGRA'. The dance is so colourful, lively and vivid that the beats of 'dhol' and the rocking dance steps will surely allure one to join the non-stop 'Bhangra'.

printed at tara art printers pvt. ltd., new delhi-02